पद भाग क्र.१

१ :- मिनखा देह
२ :- सतगुरु महिमा
३ :- सतगुरु प्रताप
४ :- बिरह
५ :- सुरातन
६ :- भक्ति की दृढ्ताई को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

१

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	जामो हे भारी १६३	१
२	मन रे ओ तन अेसा लोई २२४	४

२

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	धिन धिन भाग हमारा हो १००	६
२	हर गुरु दोय मा जाणो हो १४१	६
३	हो ज्याहाँ प्रमपद तत्त १५५	८
४	म्हारा सतगुरु परम सनेही हो २४०	८
५	सतगुरु महिमा किजे हो ३७४	९
६	वो दिन को कब उगे हो ४२१	१०

३

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	डुब था डेह मांय ११५	१०
२	गुराजी की सरभर अवर न कोई १३१	१२
३	जाँ दिन ते किरपा होई रे १५८	१३
४	नांव कळा बिध न्यारी संतो २४९	१४
५	ओ कोई अरथ बतावे साधो २५३	१५
६	सतगुरां सा कोई सेण न देख्या ३७५	१६
७	सतगुरां ओंषध पाई ल्याय ३७६	१७
८	सतगुरु भेव बताविया ३७७	१८
९	सतगुरु तारेगा मुज आन ३७९	१९
१०	तारेगा ते:तीक ३९६	१९
११	वा बिध सबसु न्यारी वो ४१६	२१

४

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अेसो कोई ताप बुझावे आय १६	२२
२	हे तूं बाबल मुज परणावो हो १५३	२३
३	क्या मे करु उपाई संतो २१०	२४
४	मेरे लागी हो उर शबद भाल २३४	२५
५	मेरे प्रितम प्यारे कब मिले हो २३६	२६
६	म्हारो ने संदेसो २४२	२६

७	पिया मे दोरी हो २७९	२८
८	राम मिल्या बिन हरजन दुखिया २९६	२९
९	सब बिध सारण काम ३०५	३०
१०	संतो मै तो करम अभागी ३६५	३०

५

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	भगत करा ओ दास सूं ७६	३२
२	भगत करे जन सूरा हो ७७	३२
३	हरजन हरगुन गावे हो १४५	३४
४	हरिजन सुरा १५१	३५
५	जम जालम हे १६२	३६
६	जनसा सूर न कोई हो १६५	३८
७	जुग सोभा चाहुँ नहि १८७	३९
६	ओर सकल बिध सेली २५६	४०

६

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	मन रे करडी बिना सब काची २२२	४१
२	ओ तेरे क्या न्यांव हे २५५	४३
३	राम तेरी दाय पडे जुं किजे २९७	४४
४	साधो भाई समझ सोच रहो गाढा ३१६	४५

१६३

|| पदराग जेतश्री ||

जामो हे भारी हे भारी

जामो हे भारी हे भारी ||

कोई धोवे संत हजारी || जामो हे भारी हे भारी ||टेर||

जामो याने शरीर पर पहना हुआ चोला याने कपडे का पेहराव जैसे हम शरीर पर भारी,हलके चोले पहनते वैसे जीव यह मनुष्य का कारजीक चोला,देवताओं का कारणीक चोला,नरक का याचनीक चोला,चौरासी लाख योनि का स्थुल चोला,ऐसे अलग अलग अनेक प्रकार के चोले पहनता। इन सब चोलों में मनुष्य देह का मोल नहीं करते आता ऐसा भारी चोला है परंतु सभी का यह मिला हुआ चोला अनंत जन्मों के अनंत प्रकार के कर्मरुपी कीट से गंदा हुआ है। इस चोले को लगे हुए कर्मो के किट को धोकर मलहीन करने पर जैसे जीव को मनुष्य देह छुटने के बाद अलग अलग देवादिक,नरकादिक,८४ लाख योनि के चोले मिलते है वैसे धोकर मलहीन करने पर ने:अंछर का अमर चोला मिलता है। यह ने:अंछर का अमर चोला और किसी योनि से नहीं मिलता कारण उन अन्य योनि में मिला हुआ चोला मनुष्य देह समान धोकर निर्मल नहीं करते आता और कर्मो से निर्मल हुए बगैर जीव को अमर चोला कभी नहीं मिलता। यह निर्मल होने की रीत सिर्फ मनुष्य देह में है ऐसा मनुष्य देह करोडो संतों को मिला है। उसमें हजारो संत बने फिर भी सभी संत यह चोला धोते नहीं उलटा कर्मो से ज्यादा गंदा कर देते। यह चोला हजारो में से बिरला ही जीव धोता। ||टेर||

ज्हाँ धोया ज्हाँ अमर हुवारे || आवा गवण निवारी ||

सुर तेतीस सकळ सोही बंछे || मिलणो दुलभ बिचारी ||१||

जब तक यह चोला कर्म किट से निर्मल नहीं होता तब तक उसे अमरचोला नहीं मिलता। अमरचोला जब तक जीव नहीं पाता तब तक अमर चोले के जगह अन्य चोले पाते रहता परंतु अन्य चोला पाने से जन्म–मरण रुपी आवागमन का दु:ख नहीं मिटता। जिस बिरले ने यह चोला धोया है उसका आवागमन सदा के लिए मिट गया है इसलिए सभी के सभी तैंतीस करोड देवता अमर चोला पाने के लिए फिर से मनुष्य देह चाहते है। इन सभी देवताओंको देवता का चोला मिलने के पहले यह मनुष्य देहरुपी भारी चोला मिला था। उस चोलो में इन देवताओं ने कर्मो से निर्मल करने के बजाय जप,तप,सत इस कर्मकांड का गहरा कीट जीव पर लगाया और अमर चोला न पाते देवताओंका चोला पाया। इस देवता के चोलो से अमर चोला नहीं मिल सकता उलटा आगे चौरासी लाख प्रकार के दु:ख भरे चोले मिलते। देवताओंकी मनुष्य शरीर छोड्के स्वर्ग में पहुँचने के बाद बुध्दी फैलती और देवताओंको देवलोक में आगे का आवागमन का बडा धोका समझता इसलिए ये देवता अमर चोला पाने के लिए प्रभुजी से प्रार्थना करके हाथ से गमाया हुआ मनुष्य

चोला फिरसे माँगते परंतु यह मनुष्य चोला कितने भी माँगने की प्रार्थना की तो भी जब तक वह जीव देवता योनी भोगने पर ४३,२०,००० सालतक ८४ लाख योनीयों के दु:ख भोगता नहीं तब तक कितनी भी चाहना की तो भी मिलता नहीं है ऐसा यह मनुष्य देहरुपी चोला मिलने के लिए देवताओंको तथा सभी जीवों को दुर्लभ है। ।।१।।

जामा मांय अनंत गुण होई ।। जे कोई लेत बिचारी ।।
गेली जक्त धोय नहीं जाणे ।। ऊलटो कियो खुवारी ।।२।।

इस मनुष्य चोले में अंनत याने अंकों में गिने नहीं जाता ऐसा अमर होने का भारी गुण है। जिसने यह अमर होने की चतुर समझ लगाकर मनुष्य शरीररुपी चोले का अनंत याने भारी गुण जान लिया वह जीव अमर हो गया परंतु संसार के पगले नर–नारी मनुष्य चोले को संचित कर्म किट से धोकर निर्मल करने की विधि खोजते नहीं उलटा क्रियेमान कर्म करके संचित कर्मो का कीट अधिक मनुष्य तन के चोले पर बढा देते है और चोलो को उलटा खराब कर अमर चोला न पहनते आवागमन के अंनत काल के दु:ख से भरे हुए चोले चाहना न होने पर भी पहनते और वे चोले पहन पहन कर चोले के दु:ख भोगते रहते। ।।२।।

करसूं धुपे न लाताँ खुंद्या ।। पाहेण सिस पिछाड़ी ।।
जीण धोया जीण अधरज धोया ।। प्रेम नांव जळ डारी ।।३।।

जैसे यहाँ के कपडे के चोले हाथ से धोये जाते,ज्यादा गंदा रहा तो पैर से खुंदाने पर मैल मुक्त होते इससे भी अति गंदा रहा तो चोले को पत्थरपर पिछाटे मार मारकर धोये जाता परंतु ये कर्मो से गंदा हुआ मनुष्य तन का चोला कष्ट ले लेकर देवताओंकी और तीन लोकोंके साधु सिध्दोंकी सेवा पुजा करने से धोये जाता नहीं उलटा सेवा पुजा का कर्म कीट चोले को चिपकता। वैसे ही कष्ट दे देकर पैरो से तिर्थो पर चलके जाने से धोये जाता नहीं उलटा तिर्थ का कर्म चोले को डिग जाता। वैसे ही पत्थर के मुर्तियों को जा जाकर शिश निवाने से और दंड्वत प्रणाम करने से यह मनुष्य चोला साफ नहीं होता उलटा कर्मो के किट से ज्यादा गंदा होता। जिसने यह मनुष्य रुपी चोले को धोया उन्होंने देह को बिना कष्ट देते सतगुरु से प्रेम कर नाम जल से धोने की हिकमत प्रयोग की। इस हिकमत से सतगुरु ने दिए हुए नाम जल से शिष्य के घट के रोम रोम में नाम प्रगट हुआ और रोम रोम में अनंत जन्मोंसे संचित के रुप में चिपका हुआ संचित कर्म का किट हंस दसवेद्वार पहुँचते ही खाक हो गया और चोला कर्मो से साफ हो गया। ।।३।।

जळ सूं द्यूपे न साबण दिया ।। किमत कठण करारी ।।
मुन्याँ तपस्या सीध्धा पीरां ।। धोयो नहीं लगारी ।।४।।

जैसे यहाँ के कपडे खारे पानी से कितना भी साबण लगाया तो भी धोये नहीं जाते ऐसे हट से माया के क्रिया कर्म कितने भी किए तो भी मनुष्य चोला धोये नहीं जाता बल्की

जैसे खारे पानी के कारण कपडा साबण से चिकट हो जाता ऐसे हट से किए कर्मकांड से वैकुंठादिक भोगने के कर्म लगते और आवागमन के चक्कर में जीव अटक जाता। इस मनुष्य चोले को धोने की हिकमत ने के लिए बहुत ही कठीण है,करारी है। यह चोला धोने की हिकमत उपर उपर के बुध्दी से नहीं समझती। इसे समझने के लिए झीनी से झीनी याने उंडी से उंडी समझ की बुध्दी लगती,जैसे रागी,पागी,पारखु रहते,रागी याने गानेवाला, पागी याने पैरो के चिन्ह पहचाननेवाला,पारखु याने हिरे परखनेवाला,नाडी वैद्य और न्याय इनका ज्ञान सुनने से या सिखने से घट में प्रकाशित नहीं होता। यह रागी,पागी,पारखु, नाडी वैद्य तथा न्याय का ज्ञान मनुष्य के उर में उस ज्ञान की समझ रहेगी तो ही प्रकाशित होता। इसीप्रकार यह मनुष्य तनरुपी चोला धोने के लिए कैवल्य की झीनी से झीनी याने उंडी समझ की बुध्दी लगती है। जिसे यह झिनी से झिनी समझ है वही जीव यह अपने घट में ज्ञान विज्ञान प्रकाशित कर पाएगा परंतु अनेक मुनियोंने,तपस्वियोंने, सिध्दोंने,पिरोंने यह मनुष्य देहरुपी चोला अमर करने के लिए माया के कर्मकांडोंसे धोने की विधि की परंतु इनमें से एक भी यह मनुष्य तन रुपी चोला धो नहीं पाए। ।।४।।

धोबी कोट निनाणू कसीया ।। बाळ जाळ गया फाड़ी ।।
अनंत कोट संता सो धोयो ।। कसर न भागी सारी ।।५।।

जैसे कपडे धोना न जाननेवाला धोबी कपडे मल से साफ करने के लिए भट्टी पर चढाता और उबालता परंतु कैसे उबालना यह नहीं समझता इसकारण वह धोबी कपडे को जला देता और पिछाटे मार मारकर फाड देता। ऐसे मनुष्य देह रुपी चोला धोने के लिए निन्यानवे कोटी मनुष्योंने खटपट की परंतु यह चोला धो नहीं पाए उलटे फाड्कर, जलाकर अमर चोला नहीं बना सके और इस चोले को बेकाम बना दिया। आदि में भी अनंत कोटी संतो ने इस चोले को धोने का प्रयास किया परंतु संचित कर्म से साफ कराने की कसर किसीसे भी नहीं भागी। ।।५।।

पाँच ज्ञान तिथंकर पाया ।। कर गया फगल बिचारी ।।
जन सुखराम धोवणे लागा ।। करडो मतो ऊर धारी ।।६।।

तिर्थंकरोंने इस चोले को संचितकर्म इस गंदगी से साफ कर बेदाग किया और कर्महिन कर मतज्ञान,श्रृतज्ञान,अवधिज्ञान,मनपर्चेज्ञान और कैवल्यज्ञान ऐसे पाँचों ज्ञान का बनाया। इसीप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैंने भी तिर्थंकरो सरीखा कड्क मत हृदय में धारण कर मेरे मनुष्य चोले को धोना शुरु किया। ।।६।।

टिप:-१)मतज्ञान-जो घडेगा या घडणेवाला है वही मत मे आता और वो मत बदलता नहीं ऐसा जो ज्ञान है उसे मतज्ञान कहते और यह ज्ञान जिसे प्राप्त हुवा है उसे मतज्ञानी कहते।

२)श्रृतज्ञान-सच्चा क्या और झुठा क्या यह सहज मे ध्यान मे आता और उसके अनुसार

सही न्यायसे निर्णय लेनेकी क्षमता आती ऐसे ज्ञानको श्रृतज्ञान कहते और ऐसा ज्ञान प्राप्त होता उसे श्रृतज्ञानी कहते है।

३)मनपर्चेज्ञान–जिस ज्ञान मे सामनेवाले जीव के मन मे क्या है वह सभी पहचानने की क्षमता रहती ऐसे ज्ञानको मनपर्चेज्ञान कहते और यह ज्ञान जीसे अवगत होता उसे मनपर्चेज्ञानी कहते।

४)अवधीज्ञान–जीस ज्ञानसे दुरीपर की घटना सहज सुझती ऐसे ज्ञानको अवधीज्ञान कहते और यह ज्ञान जीसे अवगत होता उसे अवधीज्ञानी कहते।

५)कैवल्यज्ञान–जीस ज्ञानसे कुदरत कला प्राप्त होती और वह ज्ञानी सतस्वरुप को पहुँचता है। ऐसे ज्ञानको कैवल्यज्ञान कहते और ऐसा ज्ञान जीसने प्राप्त किया है उसे कैवल्यज्ञानी कहते।

२२४

|| पदराग गोडी ||

मन रे ओ तन अेसा लोई
मन रे ओ तन अेसा लोई ||
जे कोई समझ सिमरे साहेब || आपी क्रता होई ||टेर||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मन को,जीव को ज्ञानसे समझा रहे की, अरे मन,अरे जीव,यह मनुष्य शरीर ऐसा भारी है की,इस मनुष्य शरीर से जो कोई तृप्त सुख देनेवाले कर्ता को समझकर उसका स्मरण करेगा तो वह खुद सुखों का कर्ता बन जाएगा। उसे सुख माँगने के लिए किसी के पास जाना नहीं पडेगा। ||टेर||

टिप:–महाराज ने यहाँ पर मन जीव के लिए संबोधित किया है।

या तन सुं उजळ घर जावे || इण सुं राजा होई ||
या सूं रूप करूप बंधाणा || सुख दु ख पावे लोई ||१||

अरे मन,अरे जीव,इस शरीर से उँच कर्म,करणियाँ करने से जीव उत्तम घर में जन्म लेता। इसी मनुष्य शरीर से तप करने से चक्रवर्ती समान राजा बनता की जिसके राज में सुरज नहीं डुबता इतना बडा उसका फैला हुआ राज रहता याने उसके राजक्षेत्र में कही ना कही सुरज उगाही रहता। अरे मन,अरे जीव,इस मनुष्य शरीर से तिर्थ करने पर रुपवान बनता और इसी मनुष्य शरीर से निच विकारी वासनाओंकी क्रिया कर्म करने से और पापकर्ते देवी–देवताओंकी भक्ति करने से उसका मुख कोई भी देखना पसंद नहीं करता ऐसा ग्लानी उपजनेवाला कुरुपवान बनता। इस मनुष्य शरीर के करणी से लोग सुख और दु:ख भोगते रहते है। ||१||

ईण सूं दीन दुनि सिर होई || या सूं सुरगां जावे ||
इण सूं पीर पैकंबर कहाणा || फिर अवतार कहावे ||२||

अरे मन,अरे जीव,मनुष्य देह से निच करणी करके दरिद्री(गरीब)होते और उच्च करणी

करके दुनिया के उपर वशिष्ठ याने सबसे समृध्द होते है। इस मनुष्य शरीर की करणी से स्वर्ग में जाते है। अरे मन,अरे जीव,इसी मनुष्य शरीर से करणी करके करामाती पीर और पैगंबर बनते। इसीप्रकार इसी नर तन से करणियाँ साधके रामचंद्र,कृष्ण समान अवतार बनते। ।।२।।

मिनषा देहे अमोलक हीरो ।। अेसो अवर न कोई ।।
इण सूं सेंस महेसर देवा ।। या सूं भगवंत होई ।।३।।

ऐसा यह मनुष्य तन अमोलक याने हिरा है। ऐसे मनुष्य समान३ लोक १४ भवन में सतलोक का राजा ब्रम्हा का देह,बैकुंठ का राजा विष्णु का देह,कैलास का राजा शंकर का देह,शक्ति का देह भी नहीं है ऐसा यह मनुष्य देह है। इसका जरासा भी मोल करते नहीं आता ऐसा यह अनमोल हिरा है। अरे मन,अरे जीव,इससे पचास करोड योजन पृथ्वी सहज मे बिना बोज महसूस करते सिर पर धारण करनेवाला शेषनाग बनता। अरे मन,अरे जीव,संहार करनेवाला महेश,उत्पत्ती करनेवाला ब्रम्हा,पालन पोषण करनेवाला विष्णु,शक्ति इसी मनुष्य तन से करणियाँ करके बनती। इसी मनुष्य तन से भगवंत याने सुध बुध से कर्म काटकर तिर्थंकर बनते। ।।३।।

इण में उलट आद घर पोंचे ।। या में केवळ होई ।।
इण सूं देव सकळ तन सारा ।। इण सम अवर न कोई ।।४।।

अरे मन,अरे जीव,इसी मनुष्य तन से ओअम् की साधना करके लाखो वर्ष तक काल से पकडे न जानेवाले आदघर याने भृगुटी के वासी बनते। इसी मनुष्य तन से कभी भी काल पकड नहीं सकता ऐसे दसवेद्वार के आद घर में पहुँचते आता। इसी मनुष्य तन से सोहम् अजप्पा का जाप कर पारब्रम्ह केवली बनते और इसी मनुष्य तन से पारब्रम्ह के केवली के परे का तिर्थंकर केवली बनते तो इसी मनुष्य तन से पारब्रम्ह केवली और तिर्थंकर केवली के परे का सतस्वरुप केवली बनते आता। अरे मन,अरे जीव,इसी मनुष्य शरीर से करणियाँ कर सभी देवता के तन बने और इसी मनुष्य तन से एक सौ एक यज्ञ कर तैंतीस करोड देवताओंका राजा बनता ऐसा यह मनुष्य तन है। इस मनुष्य तन के समान ३ लोक १४ भवन और ३ ब्रम्ह के १३ लोकोंमे कोई देह नहीं है। यह सृष्टी बनानेवाला पारब्रम्ह (होणकाल)कर्तार का देह भी इस मनुष्य देह समान नहीं। ।।४।।

ओ सूण जनम इसो हे भाई ।। तिण मे फेर न सारा ।।
के सुखराम समझ मन मेरा ।। सिमरो सिरजण हारा ।।५।।

अरे भाई मन,ऐसा यह मनुष्य जन्म है। इसके अनमोल अनंत गुणोंमें बाल समान भी कसर नहीं है। इसलिए ये मेरे मन तू समझ और तुझे जिसने यह अनमोल मनुष्य तन दिया उस तन देनेवाले सिरजनहार का स्मरण कर और स्वयम् सिरजनहार समान सुखों का कर्ता बन जा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।५।।

१००

|| पदराग धनु प्रभाति ||

धिन धिन भाग हमारा हो

धिन धिन भाग हमारा हो || मेरा सतगुरू द्वार पधारे हो || टेर||

मेरा भाग्य धन्य है,धन्य है। मेरे सतगुरु मेरे द्वार पधारे है। || टेर||

करम कीट सब भागे हो || मेरा ताळा उदे होय जागे हो ||१||

उनके प्रताप से मेरे कालकर्म के सभी कीट भाग गए और मेरी रामजी के साथ लिव जागृत हो गई। ||१||

दुबध्या दुरमत भागी हो || राम रटण लिव लागी हो ||२||

मेरी विषय वासनाओंकी दुरमती दुबध्या भाग गई और मुझे राम रटने की लिव लग गई। ||२||

भरम अज्ञान नसाया हो || परम चेन सुख आया हो ||३||

मेरा भ्रम,अज्ञान नाश हो गया और मुझ में परमचेन,परमसुख प्रगट हो गया। ||३||

बिष रस सब मिट जावे हो || इमरत सीरा आवे हो ||४||

मेरे विषय रस मिट गए और मेरे घट में अमृत के रस की सीरा याने धारा उदय हो गई। ||४||

आन देव सब भागे हो || म्हारा राम राज उर जागे हो ||५||

मेरे हंस के हृदय से रामजी छोड्कर सभी अन्य देवता भाग गए और मेरे हृदय में रामजी का राज जागृत हुआ। ||५||

असंख जुगा के मांही हो || सतगुरू सम कोइ नाही हो ||६||

मैं असंख्य जुगो में भटका परंतु मुझे तीन लोक चौदा भवन में सतगुरु के समान कोई नहीं दिखा। ||६||

सांसाँ सोग मिटाया हो || जां घर सतगुरू आया हो ||७||

जिस दिन मेरे सतगुरु मेरे द्वार आए उसी दिन मेरी संसार की चिंता,फिकीर और मरने के पश्चात के काल के यातनाओंसे ओतप्रोत भरे हुए भारी दु:ख मिट गए |||७||

बेद कुराण सरावे हो || गुरू मेहेमा हर गावे हो ||८||

ब्रम्हा ने वेद,महंमद ने कुराण में जीव को काल से मुक्त करने का सतगुरु का प्रताप बखाण किया है। ||८||

केहे सुखराम सुणाई हो || गुरा सम नहि धर माही हो ||९||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,गुरु के समान तीन लोक चौदा भवन में कोई भी देवी–देवता,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,इंद्र,अवतार आदि नहीं है। ||९||

१४१

|| पदराग केहरा ||

हर गुरू दोय मा जाणो

हर गुरू दोय मा जाणो हो साधो ।। ज्ञान करो सुण ठाणो हो ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हर और सतगुरु इनको दो करके अलग अलग मत समझो,सतज्ञान से विचार करो और समझ लो की हर और सतगुरु एक ही है या अलग है तो समझेगा की हर और गुरु आदि से एक ही है। ---(गंगेचे उदा.)।।टेर।।

असंख जुगाँ में हर गुरू अेकीं ।। न्यारा नहि बखाणो हो ।।१।।

असंख्य युगों से सभी ज्ञानी,ध्यानी हर और गुरु एक ही है अलग अलग दो नहीं है ऐसा ज्ञान से समझाते आए है। ।।१।।

सबद भेद सो ब्रम्ह कहिजे ।। दे मुख होय सुणाणो हो ।।२।।

सतगुरु के देह से शिष्य में प्रगटा हुआ सतशब्द और खंड-ब्रम्हंड के परे के सतस्वरुप का सतशब्द एक ही है ये दो नहीं है। यह सतशब्द सतगुरु अपने देह के मुख से शिष्य को सुनाते है। ।।२।।

गुरू मिलिया जब हरजी मिलिया ।। अंतर नाँही रेहाणो हो ।।३।।

सतगुरु मिलने पर ही रामजी मिलते है। सतगुरु नहीं मिले तो खंड ब्रम्हंड के परे के सतस्वरुप को कितना भी रटा तो भी सतस्वरुप रामजी याने सतब्रम्ह घट में प्रगट नहीं होता। सतगुरु मिलने पर रामजी मिलने में कोई कसर नहीं रहती इसलिए सतगुरु और हर अलग अलग है यह दिल मे अंतर मत रखो। ।।३।।

गुरू पूज्या ज्याहाँ हर कूं पूज्या ।। न्यारा नाहि रेहाणो हो ।।४।।

सतगुरु की पूजा,सतगुरु की सेवा याने ही रामजी की पुजा,रामजी की सेवा की यह होता। इसलिए गुरु की पूजा की उसमें हर की पूजा करने में कुछ बाकी नहीं रहा। ।।४।।

तिरिया जाय करे प्रसादी ।। बाळक माँही अघाणो हो ।।५।।

जैसे गर्भवती स्त्री के घट में बालक रहता। वह बालक स्त्री को भोजन देने से धाप जाता वैसे ही सतगुरु के घट में रामजी रहते वे रामजी सतगुरु की पुजा करने पर प्रसन्न होते। इसलिए गुरु की पूजा में ही रामजी की पूजा है,रामजी की पूजा गुरु पूजा से न्यारी नहीं है।इसलिए हर और सतगुरु मे अंतर नहीं रखना। ।।५।।

पेड सिंचिया सब सुख पावे ।। डाळा बीज डेहाणो हो ।।६।।

जैसे पेड के जड को पानी देने से पेड की सभी डालियाँ,पत्तें,फूल,फल,बीज इन सबको एकसरीखा जल मिल जाता,कम जादा नहीं मिलता इसीप्रकार सतगुरु को पूजने से रामजी पूजे जाते। ।।६।।

जन सुखराम मोख जो चहिये ।। तो गुरूं सूं दूर न जाणो हो ।।७।।

इसलिए मोक्ष चाहिए हो तो गुरु ही रामजी है यह जानकर गुरु को पूजना चाहिए। गुरु और रामजी न्यारे है यह समझकर गुरु से दूर नहीं होना चाहीए ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।७।।

१५५

|| पदराग धनु प्रभाति ||

हो ज्याहाँ प्रमपद

हो ज्याहाँ प्रमपद तत्त दीयो हो || मेरा भरम बिंधुसण कीया हो ||टेर||

मेरे घट में परमपद,परमतत्त प्राप्त करा देकर मेरे भ्रम नष्ट करा देनेवाले सतगुरु मुझे कब मिलेंगे?||टेर||

वे जन को कब आसी हो || वे सत्त लोक का बासी हो ||१||

जो सतस्वरुप सतलोक में रहते है याने सतस्वरुप ब्रम्हंड में रहते है ऐसे सतगुरु मुझे कब मिलेंगे?||१||

निरभे मो कूं कीया हो || प्रममोख पद दीया हो ||२||

जो मुझे काल के डर से निर्भय कर परमसुख का पद देंगे ऐसे सतगुरु मुझे कब मिलेंगे? ||२||

धिन धिन वा पुळ कुवासी हो || जां दिन सतगुरू आसी हो ||३||

वह पल,वह दिन धन्य रहेगा जिस दिन मुझे सतगुरु मिलेंगे। ||३||

चरणा सीस निंवासुं हो || सन मुख दर्शण पासु हो ||४||

मैं ऐसे सतगुरु के सन्मुख जाकर उनके चरणो पर मेरा सिस कब नमाऊँगा? और उनके दर्शन मुझे कब होंगे? ||४||

उन सुरत की बल हारी हो || जाहाँ दीया ज्ञान बिचारी हो ||५||

जिस मुख से सतगुरु भ्रम विध्वंस करने का जगत को सतज्ञान देते और मुझे भी वे सतज्ञान देंगे ऐसे मेरे सतगुरु के सुरत पर मैं मेरा प्राण न्योछावर करता हूँ। ||५||

सुखदेव बोहो दु:ख पावे हो || ये दिन दुबरा जावे हो ||६||

जब तक ऐसे सतगुरु मिलते नहीं तब तक हर पल निकालना मुझे बहुत दोरा जा रहा है याने कठीन जा रहा है ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ||६||

२४०

|| पदराग धनु प्रभाति ||

म्हारा सतगुरू परम सनेही हो

म्हारा सतगुरू परम सनेही हो || राम मिल्या इण देही हो ||टेर||

सतगुरु मेरे परमस्नेही है,मेरे परम हितेषी है। उनकी कृपा से मेरे घट में मुझे रामजी मिले ||टेर||

जीवत मोख मिलाया हो || करम खोद सब बहाया हो ||१||

मेरे सतगुरु ने मुझे जिवीत ही मोक्ष में मिला दिया। मेरे सतगुरु ने भवसागर में रखनेवाले मेरे सभी कर्म खोद खोद कर पानी में बहा दिए याने मिटा दिए। ||१||

रूप न चूप न काया हो || वो मुज देस बताया हो ||२||

सतगुरु ने मुझे यहाँ के पाँच तत्वोंके समान जहाँ रुप एवम् काया नहीं है या विषय सुख

नहीं है ऐसा सतस्वरुप देश बताया। ।।२।।

भींत दिवाल न पाया हो ।। अेसे अधर घर आया हो ।।३।।

सतगुरु ने मुझे जिस देश में घरो को मिट्टी पत्थर की दिवारे या भित नहीं है और जहाँ सत विज्ञान के अधर घर है वहाँ पहुँचाया। ।।३।।

चंद न सूर न देवा हो ।। वाँ घर का सुख लेवा हो ।।४।।

सतगुरु ने मुझे जिस देश में यहाँ के देश समान चाँद या सूरज का उजाला नहीं है ऐसे दिव्य उजाले के घर पहुँचाया। वहाँ मैं अजब सुख ले रहा हूँ। ।।४।।

ब्रम्हा बिसन कुवावे हो ।। ऊण घर कूं नित ध्यावे हो ।।५।।

संसार के लोग ब्रम्हा,विष्णु,महादेव जिसे कहते वे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव जिस घर को पाने की नित्य आशा करते ऐसे घर को सतगुरु के दया से मैंने पाया। ।।५।।

कह सुखराम सुणाई हो ।। हम मिल्या आद घर जाई हो ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं सतगुरु के दया से सतस्वरुप के महासुख के आद घर पहुँचा। ।।६।।

३७४

।। पदराग धनु प्रभाति ।।

सतगुरू मेहेमा कीजे हो

सत्तगुर म्हेमा कीजे हो ।। तन मन धन सब दीजे हो ।।टेर।।

सतगुरु को तन,मन,धन देकर सतगुरु की महिमा करो। ।।टेर।।

वे मोख मुगत का दाता हो ।। वां बिन नरका जाता हो ।।१।।

सतगुरु मुक्ति के दाता है,वे नहीं मिलते थे तो मैं महादु:ख भोगते नरक में पडा रहता था ।।१।।

सुण मन तोहिज बतावे हो ।। गुरू बिन धाम न जावे हो ।।२।।

अरे मन,सुन तुझे सतगुरु नहीं मिलते तो तू बडे सुख के धाम कभी नहीं पहुँचता था यह मैं तुझे बताता हूँ। ।।२।।

प्रेम सहेत सब कीजे हो ।। गुरू अग्यामे रीजे हो ।।३।।

अरे जीव,गुरु के साथ कुटुंब परिवार से भी अधिक प्रेम कर और उनके आज्ञा में रह। ।।३।।

वां सुं कछू न दुरावो हो ।। ज्याँ कर साहेब पावो हो ।।४।।

जिनके दया से साहेब घट में पाया ऐसे सतगुरु के विचारो से कभी दूर मत हो। ।।४।।

जुग जुग करम कमावे हो ।। गुरू सरणे सब जावे हो ।।५।।

मैंने जुग जुग से आजदिन तक जितने भी काल कर्म कमाये वे सभी काल कर्म गुरु के शरण में आते ही मिट गए। ।।५।।

गुरू पूज्या सुख पायो हो ।। प्राण आद घर जावे हो ।।६।।

सतगुरु की पूजा याने शरण लेने से मेरा प्राण सतस्वरुप के सुख पाया और सतस्वरुप आदघर में पहुँच गया ऐसे मेरे सतगुरु धन्य है,धन्य है। ।।६।।

सतगुरू अेसा कुवावे हो ।। सुखदेव भेद बतावे हो ।।७।।

ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी नर–नारी को काल के दु:ख के देश से निकलकर सतस्वरुप के सुख के देश में पहुँचने का भेद बताते। ।।७।।

४२१

।। पदराग धनु प्रभाति ।।

वो दिन को कब ऊगे हो

वो दिन को कब ऊगे हो ।। मेरा प्राण आद घर पुगे हो ।।टेर।।

मेरा प्राण सतस्वरुपी आदिघर पहुँचेगा,वह दिन कब उगेगा?।।टेर।।

धिन धिन वा पुळ क्काई हो ।। मेरे ध्यान लगे सुन माही हो ।।१।।

मेरा ध्यान ब्रम्ह शुन्य में लगेगा वह पुल मेरे लिए धन्य रहेगी,धन्य रहेगी। ।।१।।

त्रिबेणी तट धारा हो ।। कब न्हावे प्राण हमारा हो ।।२।।

मेरा प्राण गंगा,यमुना,सरस्वती के त्रिवेणी संगम में न्हायेगा वह दिन कब आएगा?।।२।।

जोत अखंडत मांही हो ।। कब जन देखे जाही हो ।।३।।

मैं घट के अंदर की अखंडीत सतस्वरुप की ज्योत याने उजाला कब देखुँगा?।।३।।

त्रिगुटी स्हेर मंजारा हो ।। कब आसण होय हमारा हो ।।४।।

मेरा घर त्रिगुटी शहर में कब होगा?वहाँ आसन याने हरदम रहने की जगह कब होगी? ।।४।।

कह सुखराम बिचारो हो ।। अब मोय पार उतारो हो ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं सतस्वरुप आदघर कब पहुचुँगा? और भवसागर पार कब करुँगा?इन विचारो में मेरा प्राण रात–दिन चिंतीत रहता। इसलिए सतगुरु महाराज आप मुझे जल्दी भवसागर से पार करा दो और सतस्वरुप आद घर पहुँचा दो यह मेरी आपसे बिनती है। ।।५।।

११५

पदराग गुड ।।

डूबा था डेह मांय नहीं तर डुबा था

प्रस्तावना

परापरी से दो पद है ।

हम आदि में पारब्रम्ह में थे। वहाँ हमे सुखों की चाहना थी। उस चाहना के प्रति हम पारब्रम्ह और त्रिगुणीमाया से उपजे हुए त्रिगुणीमाया के ३ लोक १४ भवन के मृत्युलोक में आए और इस लोक में त्रिगुणी माया के विकारी वासनाओंके कारण हम यहाँ अटके और महादु:ख में पडे। जैसे सागर में डेह रहते,उस डेह में यदि कोई फँस गया तो उसका

निकलना बडा मुश्किल रहता। उसे वहाँ से सिर्फ कोई एक समंदर का जानकार गोताखोर ही निकाल पाता। वैसेही भवसागर याने विकारी मायाओंका सागर,डोह याने इस त्रिगुणी माया की अलग अलग वासनायें काम,क्रोध,मद,मोह,लोभ,मत्सर,चौसठ लक्षण(शुभ+अशुभ)तीर्थ,व्रत,उपवास आदि इसमें से मुझे सतगुरु ने निकाला और कैसे निकाला यह भी बताते।

|| पदराग गुड ||

डूबा था डेह मांय नहीं तर डुबा था
डुबा था डेह माय नहीं तर डुबा था ||
म्हारा सतगुरू काड्या आय || नहीं तर डुबा था ||टेर||

मैं डोह में डूब रहा था। मेरे सतगुरु ने मुझे निकाला,नहीं तो मैं डोह में डुबके मर रहा था। ||टेर||

काम क्रोध मद लोभ में हो || सब जग डुबो आय ||
सतगुरुं हेलो पाड़ीयो हो || मेंर सुण्यो वां जाय ||१||

काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर,अहंम के डोह में सभी जगत के नर-नारी डूब रहे है। मैं भी सभी जगत के नर-नारी समान डूब रहा था। सतगुरु ने काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर, अहंम आदि डोह में से कैसे बचना इसका ज्ञान आवाज दे देकर सभी डूबनेवाले को सुनाया। वह सतगुरु का ज्ञान मैंने ध्यान देके सुना। ||१||

दोय नेजा गुरू लाईया हो || पिड़ी अेक बणाय ||

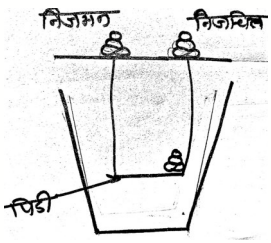

दोय नर लागा खेंचणे हो || युं गुराँ काड्या आय ||२||

सतगुरु ने मुझे डोह में से निकालने के लिए ओअम,सोहम ऐसे साँस की दो रस्सियाँ लाई और उस रस्सियोंको एक रामनाम की पिडी लगाई तथा निजमन और निजचित्त ये दो पुरुषों से मुझे डोह से खेचने लगवाया। इसप्रकार सतगुरु ने मुझे डोह से निकाला नहीं तो मैं डोह में डूब रहा था। ||२||

सेजां सेजां काडीयां हो || जतन किया ब्हो भाँत ||
बली हारी गुरूदेव की हो || काड्या कर कर ख्याँत ||३||

मुझ पर एक भी कष्ट पडने न देते सेजासेज डोह से निकाला और डोह से निकालते वक्त फिरसे डोह में गिरे नहीं ऐसा निकालते वक्त जतन किया। गुरुदेव ने खयाल दे देके मुझे निकाला नहीं तो मैं डूब जाता था। इसलिए मेरे गुरुदेव की बलिहारी है |||३||

भवसागर सूं काड कर हो || गिरवर चाड्यो मोय ||
तिन लोक लारे रया हो || भौसागर क्या होय ||४||

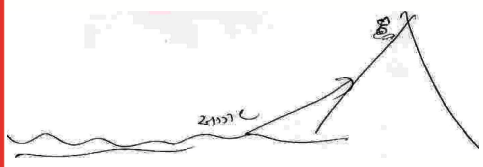

गुरुदेव ने भवसागर से निकालकर सतस्वरुप के गिरवर पर चढा दिया। ३ लोक के परे गिगन में चढा देने से मुझे

३ लोक के भवसागर के डोह का अब जरासा भी डर नहीं रहा ।।।४।।

पाँच पुरस दोळा हुया हो ।। जाण न देवे मोय ।।
सतगुरुं भेद बताई या हो ।। चड्या पिछाडी होय ।।५।।

पाँच पुरुष शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध मेरे दोले होकर मुझे घेर घेर के भवसागर में खिंच रहे थे,भवसागर के बाहर जाने नहीं दे रहे थे। सतगुरु ने रेचक–पुरक के साथ अमाउ कुंभक करने से ये पाँच पुरुष सहज मर जाते ये भेद बताया और मैंने भेद के अनुसार अमाउ कुंभक करते ही ये पाँचों पुरुष मेरे से अलग हो गए और मैं पश्चिम के रास्ते से चढने लगा। ।।५।।

निसरणी होय चड गया हो ।। सतगुरा के प्रताप ।।
जन सुखदेवजी पोंचीया हो ।। ज्हाँ निरंजन आप ।।६।।

जैसे गिरवर पर चढने के लिए निसरणी याने सिढी रहती ऐसी निसरणी सतगुरु के प्रताप से मेरे घट में बन गई और पश्चिम के रास्ते से चढकर जहाँ निरंजन काल के परे का खुद निरंजन साहेब है वहाँ आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मैं पहुँच गया। ।।६।।

१३१

।। पदराग कानडा ।।

गुराजी की सरभर अवर न कोई
गुराजी की सरभर अवर न कोई ।। तीन लोक फिर देख्या हे लोई ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं ब्रम्हा के सतलोक में,विष्णु के बैकुंठ में, महादेव के कैलास में,शक्ति के शक्तिपुरी में,इंद्र के इंद्रपुरी में और मृत्युलोक में के सभी ज्ञानी,ध्यानियों के धाम में सभी तरफ घूमा परंतु मुझे तीन लोक चौदा भवन में अमरपद प्राप्त करा देनेवाला सतगुरु के जैसा अमरलोक में पहुँचानेवाला कोई भी कही भी दिखा नहीं। ।।टेर।।

अेसा गुरू भेव बतायाँ सांई ।। सेजाई सेज मिल्या पद मांई ।।१।।

मुझे सतगुरुजी ने स्वामी का ऐसा भेद बताया की,मैं सहज मे अमर पद में मिल गया। ।१।

देहिके मांय दिखाया देवा ।। तीन लोक सिर निज तत भेवा ।।२।।

मुझे मेरे देह में ही निरंजन देव बताया। यह निजतत्त याने निरंजनदेव तीन लोक में के सभी देवो के उपर का देव है। ।।२।।

बिन कर पाँव गिगन सिर आया ।। बिन नेणा हर दर्सण पाया ।।३।।

जैसे यहाँ गिगन में याने पहाड पर रहनेवाले देवता का दर्शन लेने के लिए गया तो पैरो से चढने का काम पडता,हाथों से पहाड का आधार लेने की जरुरत पडती और फिर पहाड पर चढ के जानेपर आँखों से देवता का दर्शन लेने का काम पडता उसीतरह मुझे गिगन में चढने के लिए हाथ,पैरों की एक की भी जरुरत पडी नहीं। मैं सहज मे बिना हाथ,पैरो के आसरे से गिगन में चढ गया वहाँ मुझे बिना आँखों से हरी के दर्शन हुए। ।।३।।

आपज जोत ऊजियाळो माही ।। दसवे द्वार निरंजण सांई ।।४।।

जैसे पहाड पर अंधेरे में तेल घी के बाती से देवता का दर्शन लेना पड्ता उसी तरह मुझे घट में दसवेद्वार में निरंजन साई के ज्योती से ही निरंजन साई का दर्शन हुआ। ।।४।।

कह सुखराम अमरपद पाया ।। जां बिछड्या तां मांय संभाया ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,मैं अमर पद में पहुँच गया अब मेरा जन्म–मरण में पड्ने का काल का देश छुटा और मुझे जहाँ जन्मना नहीं,मरना नहीं ऐसा अमर पद मिला। मैं अनंत युग पहले इस पद में था परंतु मन और पाँच आत्माओंके विषय वासना से कर्म करते इस पद को छोड और युगोनयुग काल के जन्म–मरण के दु:ख भोग के तीन लोक चौदा भवन में घूमता रहा। सतगुरुजी ने मेरे कर्म,विषयवासना में डालनेवाले मन,पाँच आत्मा मार दिये और जहाँ विषय वासना नहीं ऐसे सतस्वरुपी ब्रम्ह में दसवेद्वार में मन और पाँच आत्मा में लिपटे हुए जीव का कोरा ब्रम्ह करके सतस्वरुप ब्रम्ह में समा दिया। ।।५।।

१५८

।। पदराग धनाश्री ।।

जाँ दिन ते किरपा होई रे

जाँ दिन ते किरपा होई रे ।। नीतर भूला जाय ।।

अंतर में आख्याँ खुली रे ।। सतगुरू मिलिया आय ।।टेर।।

हे साँई,तेरे दरबार में और गर्भ में तेरी ही भक्ति करुँगा यह मैंने करार तेरे से किया था परंतु जगत में आते ही मन के वासनाओंके कारण तेरी भक्ति करने का करार भूल गया और विषय रस और अन्य देवाओं के भक्ति में लग गया जब मुझे सतगुरु मिले,उन्होंने ज्ञान कृपा की तब मेरे अंतर की ज्ञान आँखें खुली। मुझे तेरा करार याद आया और करार न पालने पर मुझपर पड्नेवाले काल के दु:ख दिखने लगे। ।।टेर।।

शब्द सुण्या तन थर हऱ्या रे ।। रहया राम लिव लाय ।।

इमरत घूटाँ रस पीया रे ।। ज्युँ मिसरी मुख माँय ।।१।।

सतगुरु के मुख से ज्ञान सुनते ही मेंरे शरीर का रोम रोम काँपने लगा और रामनाम की लिव मुझे लग गई। मेरे घट में सतशब्द प्रगट हो गया। मेरे मुख में मिसरी से अधिक मिठा ऐसा अमृत का रस टपकने लगा और वह रस मैं पिते रहा। ।।१।।

भूक प्यास तन में नहिरे ।। युं दरसे तन माँय ।।

सासा दीसे आँवतो रे ।। कड़वो मीठो खाय ।।२।।

इस अमृत रस के सुख से मेरे शरीर की भुख प्यास मिट गई और मेरे शरीर में मुझे साँस साँस में सुख मिलते दिखने लगा। मुझे साँस साँस में मिठा मिठा रस निपजता था वह रस मैं पी रहा था। मैं आज दिन तक कड्वा खाता था उसके जगह मिठा खाने लगा। ।।२।।

ज्यूँ तन काँपे ठंड सूं रे ।। प्रगट छानो नाय ।।

जन सुखदेव केहे सांभळो रे ।। सबद लग्यो उर माँय ।।३।।

जैसे किसी के घट में भारी ठंडी प्रगट ने से देह काँपता है और वह काँपना छिपाने पर भी छिपता नहीं प्रगट दिखता वैसे मेरा तन सतशब्द प्रगटने के कारण काँप रहा था और वह कापना मुझे दिखाई दे रहा था। यह काँपना छिपाने से भी छिप नहीं रहा था। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,इसप्रकार से शब्द मेरे हंस के हृदय में लग गया।।३।

२४९

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

नांव कळा बिध न्यारी संतो

नांव कळा बिध न्यारी संतो ।। नांव कळा बिध न्यारी ।।

जो जाण्यो सो पार पहूंता ।। ओर वार का वारी ।।टेर।।

सतनाम कला यह होणकाल की सभी मायाओंके कलाओ से न्यारी है। जिसने सतनाम कला जाणी है वे संत होणकाल के परे के महासुख के सतस्वरुप आदघर पहुँचते है। ये संत छोडकर अन्य सभी माया में की कलायें धारे हुए साधु महासुख के आद घर न पहुँचते इधर ही काल के महादु:ख में अटककर रह जाते। ।।टेर।।

माळा फेर साध पच मूवा ।। पिंडा कर कर सेवा ।।

अरथ करे कर ज्ञानी थाका ।। नेक न पायो भेवा ।।१।।

माला फेरते फेरते साधु थक मर जाते,पिंडे मुर्तियों की,तिर्थोकी सेवा कर कर मर जाते और ज्ञानी वेदो का ग्यान खोजते खोजते थक जाते परंतु किसीको भी सतनाम कला का भेद नेक मात्र भी नहीं मिलता। ।।१।।

राग छतीस राग बंध गावे ।। गुण प्रगटावे लाई ।।

पच पच मुवा रात दिन सारा ।। कुद्रतकळा न पाई ।।२।।

रागी राग को राग घर(उसके दायरे मे)में रखकर गुण प्रगट करने के लिये रात-दिन पचता और राग का गुण प्रगट कर लेता परंतु इतना रात-दिन पचकर भी कुद्रत कला नेकभर भी नहीं पाता,काल के मुख में ही रहता। जैसे-दिपक(विठ्ठलराव संवाद) ।।२।।

जोगी आंत धोय पच मूवा ।। गिगन चडावे वाई ।।

जप तप माय पच्या सन्यासी ।। वा बिध नेक न पाई ।।३।।

कई जोगी अपने आतडे धो-धो कर मर जाते और कई जोगी भृगुटी गिगन में ओअम साँस चढाके काल से युगानयुग बचते रहते,अंतीम में काल का ग्रास बन जाते परंतु काल से मुक्त होने की नेकमात्र भी सतनाम कला नही पाते। संन्यासी जप के,तप मे, पच पचकर थक जाते परंतु लेशमात्र भी सतनाम कला की विधी नहीं पाते। (रोम रोम में वह साहेब प्रगट करना चाहिए था।) ।।३।।

बेद लभेद भेद पच थाका ।। ने:अंछर नहि पायो ।।

हद कूं छाड गयो बेहद मे ।। तोही रीतो फिर आयो ।।४।।

वेद याने ब्रम्हा,नारद,व्यास आदि लबेद याने शक्ती,शेष,विश्वकर्मा,श्रीयादे आदि ,भेद याने महादेव ने मंच्छिंदनाथ से गोरक्षनाथ आदि ये सभी कष्ट कर कर थक गये फिर भी इन किसीको भी ने:अंछर नहीं मिला। कुछ संत हद याने तीन लोक चौदा भवन को लाँघकर बेहद याने पारब्रम्ह भी पहुँचते फिर भी नाम कला नहीं पाते खाली के खाली रह जाते (घट में साहेब प्रगट किए बिना रह जाते)और वहाँ सदा न रहते गर्भ में आ पडते। ।।४।।

आतो कोयन पावे कबहू ।। नाव पराक्रम भाई ।।
ओऊं सोऊं जाप अजप्पो ।। ये सब पवना मांई ।।५।।

कई साधु ओअम,और सोहम जाप अजप्पा को जपते और जादा में जादा जहाँ से पवन याने साँस उगता ऐसे पारब्रम्ह के पद में पहुँचते परंतु ये कोई नाम पराक्रम नहीं पाते। ।५।

केहे सुखराम म्हेर सतगुरु की ।। प्रेम उमंग घट आवे ।।
इण बिध नांव ने:अंछर जागे ।। उलट आद घर जावे ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह नाम पराक्रम याने ने:अंछर सतगुरु से प्रेम उपजने पर घट में जागृत होता और वह ने:अंछर हंस को घट में बंकनाल के रास्ते से उलटकर महासुख के सतस्वरुप आद घर ले जाता। ।।६।।

२५३

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

ओ कोई अरथ बतावे साधो
ओ कोई अरथ बतावे साधो।। ओ कोई अरथ बतावे ।।
जिण बिध सूं ने:अंछर प्रगटे ।। सो किमत गेहे लावे ।।टेर।।

जगत का कोई साधू मुझे मेरे घट में ने:अंछर प्रगट होगा यह भेद,यह हिकमत बताएगा क्या?।।टेर।।

ध्यान सकळ साझन कर देख्या ।। नाँव न पायो कोई ।।
अनहद जोत ऊजाळा देख्या ।। हिरां की बिरषा होई ।।१।।

मैंने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदियोंकी सभी प्रकार की ध्यान साधना की परंतु मुझमें ने:अंछर नाम नहीं प्रगटा। मैंने घट में अनहद ध्वनि सुनी,ज्योत देखी,ज्योत का उजाला देखा,हीरो की बारीश देखी परंतु इन सभी विधियोंसे मेरे घट में नाम प्रगटा हुआ नहीं दिखा। ।।१।।

सब ध्रम छोड राम हम रटीयो ।। नाँव कळा नहीं जागी ।।
सतगुरू जाय किया हम अेसा ।। सुरत गिगन ज्याँरी लागी ।।२।।

सभी धर्म त्यागकर जिस सतगुरु की सूरत गिगन में लगी है ऐसे सतगुरु के शरण गया और उनके आदेशानुसार राम राम रटा परंतु मेरे घट में नामकला छिन्नमात्र भी नहीं प्रगटी। ।।२।।

बाणी अणभे कथ हम देखी ।। सिष साखाँ कर लिया ।।

वाँ निज नाव कळा नहीं जागी ।। धरम बोहोत हम किया ।।३।।

त्रिगुणी माया के साधना से उपजी हुई वाणी कथी,पर्चे चमत्कारो के अनुभव लिए,शिष्य जोडे,शिष्य के उपर शिष्य जोड्कर शिष्य की साखाएँ बनाई,अनेक धर्म किए परंतु घट में निजनाम जागृत नहीं हुआ ।।३।।

तन मन धन गुरू देवजी कूं दिया ।। कुळ तज सरणे आयो ।।
ज्ञान अरथ भेद सब सुज्या ।। ने:अंछर हम नहीं पायो ।।४।।

मैंने तन,मन,धन गुरुदेवजी को अर्पण किया। कुल को त्यागकर बैरागी बना। वेदों के, शास्त्रोंके,पुराणोंके,संतोंके पर्चे चमत्कारोंके भेद जाने फिरभी ने:अंछर मुझे नहीं मिला। ।४।

के सुखराम नांव ज्याँ प्रगटे ।। जिण जन कूं जस होई ।।
आप जुगे जुग चडीया गढ पर ।। वे हंस त्यारे सोई ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,शिष्य के घट में निजनाम तो उस सतगुरु के कृपा से प्रगटता जो युगान युग से बंकनाल से उलटकर ब्रम्हंड के गढपर चढ बैठे है ऐसे संत हंस तारते है। ऐसे संतो का ही हंस तारने का जस याने औदा रहता अन्य माया के किसी साधू के पास वह कैसा भी करामती रहा तो भी उससे जीव नहीं तिरते। ।।५।।

३७५

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

सतगुरु सा कोई सेण न देख्या

सतगुरू सा कोई सेण न देख्या ।। ना कोई ईण सम दाता बे ।।
तीन लोक फिर सब हम देख्या ।। गुरू बिन दोजख जाता बे ।।टेर।।

मैंने सतगुरु के समान तीन लोक चवदा भवन में मुझे काल के महादु:ख से निकालकर सतस्वरुप के महासुख में भेजने का मेरा हित रखनेवाला दाता,सज्जन,हितचिंतक कोई नहीं देखा। मुझे सतगुरु दाता नहीं मिलते तो मैं दु:खों से व्यापीत नर्क के महादु:ख में पड्ता। ।टेर।

जम सरीसा बेरी पाल्या ।। दान भक्त पद दीया बे ।।
बिष की गागर फोड़ज डारी ।। कुँपां अमीरस पाया बे ।।१।।

जिन बैरी जमोंने मुझे दु:ख देने के लिए घेर लिया है उन जमोंको मेरे सतगुरु ने मुझे दु:ख देने से रोक दिया और मुझे इन जमोंसे निकालने की भक्ति दान दी। मैं विषय वासनाओंके कारण जमोंके हाथ बार-बार बिकता था,वह विष की मेरी गागर ही फोड दी और महासुख देनेवाले सतशब्द के अमृत के कुएँ के कुएँ सुख का रस पिने के लिए दान दिए। ।।१।।

गुंगे कूं मुज मुख बोलायो ।। नेण अनंत खुल आया बे ।।
पंगे कूं गुरू पावज दीया ।। हर कर बोहुत बणाया बे ।।२।।

मैं विषय वासना के कारण गुँगा हो गया था,अंधा हो गया था,पंगा हो गया था,हाथ से

लुला हो गया था परंतु सतगुरु ने मुझे सतशब्द के सुख देकर मेरे मुख से मोक्ष का ज्ञान बोलता किया,ज्ञान की अनंत दिव्य आँखें देकर मोक्ष देखता किया,ज्ञान के पैर देकर मोक्ष के सुखोंके रास्ते से चलता किया और ज्ञान के अनेक हाथ देकर सतगुरु की सेवा करते किया। ।।२।।

मेटी ही रेण तिमर सब भाँज्या ।। उदे सूर घट कीया बे ।।
के सुखराम बिरम का चेरा ।। सब अंग सुध कर लीया बे ।।३।।

सतगुरु ने मेरी वासना की अंधेरी रात मिटाकर मुझमें सतस्वरुप का वैराग्य ज्ञानरुपी सूरज उदित किया। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं बिरमदासजी महाराज का चेला हूँ उन्होंने मेरे विषय वासना के सभी अपवित्र स्वभाव मिटा दिए और मुझमें सतस्वरुप के सभी पवित्र लक्षण प्रगट करा दिए। ।।३।।

३७६

।। पदराग केदारा ।।

सतगुरां ओंषध पाई ल्याय
सतगुरां ओषद पाई ल्याय ।। चोरासी का रोग भागा ।।
मिल्या ब्रम्ह सुं जाय ।। सतगुरा ओषद पाई ल्याय ।।टेर।।

मुझे मोह माया के कारण अनंत युगो से चौरासी लाख योनियों में जन्मने और मरणे का चिकट रोग लगा था। मैंने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि देवताओंकी करणी,क्रियाओंकी अनेक दवाईयाँ ली परंतु मेरा चौरासी लाख योनि में जन्मने–मरणे का रोग लेशभर भी कम नहीं हुआ। यही मेरा जन्म–मरणे का रोग सतगुरु ने वैराग्य विज्ञान की औषध बनाकर दी वह औषध पिते ही जड से सदा के लिए भाग गया और मैं कर्मो से,मन से, पाँच आत्मा से निरोगी होकर ब्रम्ह में मिल गया । ।।टेर।।

अनंत बाजा बाजण लागा ।। अनंत ऊगा सूर ।।
अनंत इन्दर बरसण आया ।। नदीयां चाली पूर ।।१।।

वैराग्य विज्ञान औषध से मेरे घट में अनंत बाजे बाजने लगे और अनंत सूरज उग गए अनंत इंद्र बरसने लगे और नदियाँ पुरसे बहने लगी। ।।१।।

द्वादस कँवळा दरसें मोने ।। चहुँ दिस चमके बीज ।।
रूम रूम मे दिपग जूडियाँ ।। अेसी कुदरत चीज ।।२।।

मेरे घट में मुझे बारह कमल दिखने लगे। मेरे घट में चारो दिशा मे बिजलियाँ चमकने लगी। मेरे रोम रोम में दिपक चेत गए ऐसी कुद्ररत की चीज मेरे घट में प्रगटी। ।।२।।

पीवत पीवत मनवो मेरो ।। रयो हे दिवानो होय ।।
तीन लोग मुख आगे दीसे ।। ज्युँ अंजळी जळ जोय ।।३।।

यह औषध पिते पिते मेरा मन आनंदपद में दिवाना हो गया। मुझे मेरे नजर में तीन लोक चौदा भवन जैसे अंजली में जल दिखता वैसे सुक्ष्म दिखने लगे । ।।३।।

आ ओषद तो आपीज करता ।। जाणे हे पीवण हार ।।
कह सुखदेव कोई ओर न जाणे ।। कहे मुख सूं सेंसार ।।४।।

यह औषध तो सिर्फ सतगुरु आप ही कर सके यह मैं पिता हूँ इसलिए मैं जानता हूँ। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह औषध बनाना और कोई नहीं जानता। मुखसे यह औषध बनाना जानते है ऐसा जगत के ज्ञानी,ध्यानी कहते है परंतु कोई भी बनाना नहीं जानता। ।।४।।

३७७

।। पदराग जोगारंभी ।।

सतगुरू भेव बताविया

सतगुरू भेव बताविया ।। सत्त ज्ञान सुणाया ।।
मूरख मन चेताविया ।। के सूता सरप जगाया ।।टेर।।

मुझे सतगुरु ने सतज्ञान समझाकर महासुख का देश पाने का भेद बताया,जैसे साँप सोया रहता तब उसे जगत के लोग धोके में लेकर लाठियोंसे,पत्थरोंसे मारकर अधमरा कर देते है और मरता नहीं जब तक लाठियोंसे,भालेसे मुख कुचलते। वही साँप धोका होने के पहले निंद से जाग जाता था तो उससे डरते रहने से जगत के लोग धोका नहीं कर सकते और मार नहीं सकते थे। इसीप्रकार मेरा मुरख जड मन,जड जीव,माया मोह में तथा भोग वासनाओंके निंद में सोया रहने के कारण युगानयुग से सहे न जानेवाला काल का मार खा रहा था। सतगुरु का सतज्ञान सुनने पर मेरा जड मन चेतन हुआ और मुझे माया मोह और भोग वासनाओंमें काल कैसे बैठा है यह समझ आने से मैंने मोह माया तथा भोग वासना त्याग दी और मन में सतभेद धारण कर स्वयंम के उपर पडनेवाला यम का मार खतम कर लिया। ।।टेर।।

लोभ नदी भारी बहे ।। जुग गाँव बुहाया ।।
जुग जुग मे नर ऊबऱ्या ।। गुरू सरणे आया ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,युगानयुग से मनुष्य जीवन के रास्ते के बिचो बिच लोभ की भारी नदी बह रही है। उसके मंझधार में जगत के सारे गाँव के गाँव बह रहे है और धार में दु:ख भोगते डुब डुबकर हाल होकर मर रहे है। जो मनुष्य सतगुरु के शरण में आए है वे ही इस लोभ रुपी नदी में बह जानेसे बचे है और बच रहे है। ।।१।।

अब जाग्रत चेतन भया ।। जुग दुख दिखलाया ।।
सब जुग बेंता जोय के ।। मेरे डर आया ।।२।।

सतगुरु ने मुझे जगत के नर-नारीयों पर पडनेवाले छोटे से बडे काल के महादु:ख ज्ञान से समझा समझाकर बताए। ये सहे न जानेवाले दु:ख सुनकर मेरा मन जागृत याने चेतन हुआ। जैसे जगत के लोग भयभीत होने पे डर से बेचैन होते और रातदिन उस डर से सो नहीं सकते इसीप्रकार काम,क्रोध,लोभ नदी में बह जाने से होनेवाले जम के दु:ख

सुनकर मेरे मन मे भी डर आया ।२।

रात दिन सोवे नहीं ।। जम काडर खाया ।।
जन सुखदेव लव लीन हुवा ।। गुरू भेव बताया ।।३।।

उस जम का डर मुझे रात-दिन खाने लगा। जिसकारण मैं रात-दिन सो नहीं सकता था। जब सतगुरु ने काम,क्रोध,लोभरुपी नदी से उबरने का भेद बताया तब मेरा डर दुर हुआ और मैं सतगुरु के सतभेद में लवलीन हुआ और जम के महादु:ख से निकलकर सतगुरु के महासुख के परम देश में पहुँच गया तब मैं रात-दिन सोने लग गया। ।।३।।

३७९

।। पदराग केदारा ।।

सत्गुरू तारेगा मुज आण
सत्गुरू तारेगा मुज आण ।।
बिसवा बीस इकीस ऊपर ।। ओर हजारा जाण ।।टेर।।

मुझे मेरे सतगुरु इस महादु:खोंके महासागर से तारेंगे, सौ टक्का नहीं एकसौ एक टक्का तारेंगे,एकसौ एक नहीं एक हजार टक्का तारेंगे। ।।टेर।।

गोत हमारे रामसनेही ।। संगत सेण बखाण ।।
गेलो निज पंथ ज्ञान उजागर ।। पवन गजले ढाण ।।१।।

रामस्नेही यह मेरा कुटुंब परिवार है। सभी सतसंगी मेरे हितैषी(सज्जन)है याने मैं भवसागर से पार होऊ यह मेरा सुख चाहनेवाले है। सतगुरु के ज्ञान दया से मेरे लिए निजदेश जाने का साँस मार्ग का रास्ता उजागर याने खुल्ला कर दिया है ऐसे रास्ते से मैं हाथी की दौड्ती चाल चलता हूँ। ।।१।।

पेम हमारे परमसनेही ।। सोऊँ भाव पिछाण ।।
सुरत हमारी आद सरीरी ।। भेद गेहे तत्त छाण ।।२।।

सतगुरु से प्रेम तथा भाव यह मेरे परमस्नेही है। निजदेश पहुँचानेवाली मेरी सूरत यह मेरी आद शरीरी याने पत्नी है। यह सूरता पत्नि तत्त का छाण करके परमतत्त का भेद लेती है। ।।२।।

ज्ञान बिज्ञान बिचार बिधरे ।। मत मेहमत तत्त छाण ।।
जन सुखराम भाग सुं पावे ।। या बिध सतगुरू जाण ।।३।।

इसप्रकार भवसागर से तिरने को सतज्ञान विज्ञान के ,विधियोंके मत में से मेरा मत वैराग्य तत्त छानता है,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले,तत्त छानने की विधि और सतगुरु पाने की विधि पूर्व के भाग्य से प्रगट होती। ।।३।।

३९६

।। पदराग गुड ।।

तारेगा ते: तीक

प्रस्तावना

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इस पद में यह कहते कि,सतगुरु मुझे महादु:ख के भवसागर से तारेंगे ही तारेंगे। सतगुरु ही जीव को तारते इस विश्वास पर यह पद आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कथा है।

तारेगा ते: तीक ।। सतगुरू तारेगा ।।
ईण भवसागर के मांय ।। पार उतारेगा ।।टेर।।

सतगुरु मुझे जल्दी ही,निश्चित ही तारेंगे। इस भवसागर से तारकर पार उतारेंगे। ।।टेर।।

मोय भरोसो बिड़द को हो ।। सुण लिज्यो सब लोय ।।
सतगुरू सरणे नर आयकर हो ।। डूबो सुण्यो हन कोय ।।१।।

मुझे उनके बिड्द का पक्का भरोसा है,यह जगत के सभी लोग सुन लो। सतगुरु के शरण में आया हुआ मनुष्य आज दिनतक कोई भी डुबा है ऐसा आज दिनतक किसीने भी सुना नहीं। ।।१।।

असंख जुगां मे अनंत साधू ।। दे गया अणभे हाक ।।
सतगुरा के संग अवस तिरसी ।। भरत गीता साख ।।२।।

असंख्य युगोंमें अनंत साधुओंने सतगुरु के भरोसे तिरता ही तिरता इस अनुभव की जगत को हाक दी तथा गीता में कृष्ण ने भी सतगुरु के संग अवश्य तिरता यह पक्की साक्ष दी। ।२।

इस्तू आगे फूस केता ।। जळ आगे क्या आग ।।
यूं नांव आगे करम हमारा ।। जाय इसी बिधी भाग ।।३।।

जैसे अग्नी के आगे फूस जलकर राख हो जाता,जल के आगे आग शांत हो जाती। इसीप्रकार सतगुरु ने दिए हुए नाम के बल से सभी कर्म भाग जाते। ।।३।।

ओ मन मेरो किरीयो हो ।। नांव नवका होय ।।
सतगुरू सुंज बणाय सारी ।। पार कियो हे मोय ।।४।।

यह मेरा निजमन यह किरीया है याने नाव चलानेवाला है तथा सतगुरु ने दिया हुआ नाम मेरे लिए भवसागर से पार होने के लिए नौका है। ऐसे नाम नौका में मुझे बैठाकर सतगुरु ने भवसागर से पार होने की सुंज याने व्यवस्था बनायी और मुझे पार किया। ।।४।।

सूर पिछम दिस ऊगवे हो ।। गंग ऊलट फिर जाय ।।
तोई सत्तगुर तारसी हो ।। मोय भरोसो मांय ।।५।।

एक बार सूरज पूरब के बजाय पश्चिम दिशा से उग सकता और गंगा निचे की ओर न बहते उलटकर उपर पहाड पर बह सकती,परंतु कुछ भी हुआ तो भी सतगुरु नहीं तारेंगे यह नहीं हो सकता। इसलिए सतगुरु तारेंगे ही तारेंगे यह मुझे पक्का भरोसा है। ।।५।।

जन सुखदेव कहे सांभळो हो ।। सतगुरू सरणे आय ।।
पेदा करंदो रूठीयो हो ।। तोई नरक न जाय ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जगत के सभी नर–नारीयों सुनो,सतगुरु के शरण में आने से जीव तिरेगा ही तिरेगा। ऐसे शरण में आये हुए जीव पर पैदा करंदा सतस्वरुप परमात्मा स्वयम् भी जाती से रुठ गया तो भी जीव नरक न जाते भवसागर से तिरता ही तिरता,यह सभी नर–नारीयों तुम इसकी हृदय में गाठ बांध लो । ।।६।।

४१६

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

वा बिध सबसुं न्यारी वो
वा बिध सबसुं न्यारी वो ।।
वा कुद्रत कळा नियारी वो ।। वां ने:अंछर बिध न्यारी वो ।।
जो पावे सो मोख पहुँचे ।। ओर सकळ की खुवारी वो ।।टेर।।

यह कुद्रतकला होणकाल के सभी कलाओंसे न्यारी है। यह कुद्रतकला पाने से जीव को मोक्ष प्राप्त होता और अन्य होणकाल की बनाई हुई मायावी कलाओंमें रमने से जीव को होनकाल खाता। उस कारण जीवों की भारी खराबी होती। ।।टेर।।

झूट झूट आधीनपणो रे ।। झूट गरीबी होई ।।
झूट झूट सो सीळ जत्तरे ।। या मे न मोख कोई ।।१।।

परमात्मा से मगरुरी में और अहमपन में न रहते आधिन याने दासभाव से रहने से मोक्ष नहीं होता कारण आधीनपण में कुद्रत कला नहीं है। ऐसे ही गरीबी स्वभाव प्रगट करना, शील रखना,जत्ती बनकर रहना इन स्वभावों में कुद्रत कला नहीं है इसलिए मोक्ष नहीं है। यह सभी आधीनपन,गरीबी,शील,जत,माया की क्रियाएँ मोक्ष प्राप्त कर देने के लिए झुठी है। कोई ज्ञानी,ध्यानी समझता होगा की मैं आधिनपण से,गरीबी से,शील से, जत्त से मोक्ष प्राप्त कर लुँगा और मुझे मोक्ष पाने के लिए कुद्रत कला की जरुरत नहीं है तो ये समझ मोख पाने के लिए झूठी है। ।।१।।

जरणा समझ सरम सो झूटी ।। झूटी सब चतुराई ।।
अंग नाँव सबही सुण झूटा ।। ता मे मोख न काई ।।२।।

जरणा याने सहनशिलता रखना,बडो की मेर मर्यादा रखने की समझ रखना,नीच विषय रसों मे न जाने की शरम रखना,सभी शुभ शुभ कर्म करने की सभी चतुराई रखना याने किसी प्रकार से दु:ख पडैंगे ऐसे अशुभ कर्म न बनने की चतुराई रखता। आदि जैसे सभी चौसट के चौसट माया के शुभ लक्षण प्रगट करना ये मोख पाने के लिए झुठे है। इन माया के कोई भी लक्षणोंमें कुद्रतकला नहीं है इसलिए इन अंग लक्षणो से किसीका भी मोक्ष नहीं होता। ।२।

भेक बिध कूंची सब झूटी ।। झूटा बन का जाणा ।।
झूट ब्रम्ह अेक कर जाण्यो ।। झूटा सब मिल खाणा ।।३।।

षटदर्शन के भेष धारण कर साधू बनना,योग की किल्ली जानना,त्यागी बनकर बन में

जाना,सभी में एक ही ब्रम्ह जानकर साथ में भोजन को बैठकर एक दुजे के झुठन खाना इन सभी विधियों से मोक्ष नहीं होता। इसलिए ये सभी विधियाँ मोक्ष पाने के लिए झूठी है। ।।३।।

मून चुपक क्रिया सब झूटी ।। झूट दया दु:ख भाई ।।
केणी सुणणी सब ही झुटी ।। यामे मोख न काई ।।४।।

चुप रहकर मौन धारण करना आदि क्रियाएँ हाथी से लेकर चिटी तक के प्राणियों के दु:ख देखते ही घट में दया प्रगटना,वेद,शास्त्र का ज्ञान कहना,सुनना ये सभी मोक्ष पाने के लिए झुठे है। इन विधियों से मोक्ष नहीं मिलता ।।४।।

कथणी झूट अरथ सो झूटा ।। मुख सूं के सो बाई ।।
मस्ती लाय भ्रम तज बेठा ।। से झूट जग मांई ।।५।।

वेद शास्त्र की कथनी करना,अर्थ करना,मुख से वेद की कोई भी साखी,श्लोक बिना देखे कंठस्थ कहना,अलमस्त होकर काल के डर का भ्रम त्यागकर रहना ये सभी लक्षण मोक्ष पाने के लिए जगत में झूठ है। ।।५।।

सुभ अंग झूट असुभ ही झूटा ।। जाँ सूं मुक्ति न जावे ।।
पूंथो गुरू प्रेम सो साचो ।। घट मे नाँव जगावे ।।६।।

माया के सभी अच्छे और बुरे स्वभाव सतस्वरुप मुक्ति पाने के लिए झूठे है। इन किसी भी लक्षणोंमें सतस्वरुप मुक्ति नहीं है। जब प्राणी को सतस्वरुप में पहुँचे हुए गुरु मिलते और उन गुरु से जीव को निजमन से प्रेम उपजता तब घट में ने:अंछर नाम जागृत होता यह छोडकर अन्य कोई मायावी क्रिया से मोक्ष नहीं होता,उलटा काल के दु:ख में पडने की खराबी होती। ।।६।।

के सुखराम बस्त वा पायाँ ।। पीछे कारण नाँही ।।
भावे जिसा कोइ अंग व्हो जनमें ।। सब आछा जुग मांही ।।७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,घट में निजनाम वस्तु प्रगट होने के पश्चात कोई भी लक्षण पाने का कारण नहीं है। ये सभी चौसठ के चौसठ शुभ लक्षण कुद्रती प्राप्त हो जाते। संत में कुद्रत कला प्राप्त हो गई और उसके अंग नीच है तो भी मोक्ष में जाने से उसका रुकता नहीं। ने:अंछर के प्रताप से आगे–पिछे कुद्रतीही संत के सभी नीच अंग उच्च हो जाते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।७।।

१६

।। पदराग केदारा ।।

अेसो कोई ताप बुझावे आय ।।
अेसो कोई ताप बुझावे आय ।।
अधपे मेरी पीड़ मेटे ।। सो गुरू में सिष थाय ।।टेर।।

जगत में ऐसा कोई गुरु हैं क्या,जो मेरी तपन बुझा देगा। मेरी पिडा मिटा देगा ऐसा

कोई गुरु है क्या?ऐसा कोई गुरु हैं तो उन्हें मैं मेरा गुरु बनाऊँगा और मैं उनका शिष्य बनूँगा ।।टेर।।

आग बिना सुण प्राण दाझे ।। सि बिन देहे थरराय ।।
बिष बिन लेहर भाँग बिन पीयां ।। प्राण गिगन दिस जाय ।।१।।

मेरा बिना अग्नी से प्राण जल रहा है और बिना थंड से शरीर थरथरा रहा है। भांग विष पिए बिना भांग की लहरे घट में उपज रही है और मेरा प्राण गिगन दिशा में जा रहा है।।१।

बिन समसेर तीर बिन बरछी ।। मन बिंधाणो आय ।।
डर बिन डरूं बी बिना बिरह ।। बोहोत ऊप ज्यो माय ।।२।।

बिना तलवार,बिना तीर,बिना बरछी मेरे मन को छेद गिर रहे है। मुझे कोई भी डरा नहीं रहा है परंतु मैं डर रहा हूँ,मुझे बिना कारण विरह उपज रही है। ये डर और बिरह बहुत उपज रही है। ।।२।।

में बिन पाणी बुवा जाऊँ ।। जे कोई काढे आय ।।
के सुखदेव गुरू सो मेरा ।। चरणा रहूं लपटाय ।।३।।

पूर तो नहीं हैं परंतु पूर के समान बहे जा रहा हूँ। मुझे इन सारे तपन से कोई मुक्त करेगा क्या? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे मेरे गुरु के चरणो में लपटुँगा ।।३।।

१५३

।। पदराग मस्त ।।

हे तूं बाबल मुज परणावो हो
हे तूं तो बाबल मुज परणावो हो ।।
आतम का हो बापजी ।। हे तूं तो बाबल मुज परणावो हो ।। टेर ।।

आत्मा यह कन्या और बाप(सतगुरू),सतगुरू बाप से,यह कन्या कहती है कि,है पिता, मेरी शादी कर दे। आत्मा के बाप,मेरी शादी कर दे। ।। टेर ।।

आतम किन्या बचन उचारा ।। अब मुज पीर लगे जुग खारा ।।
बिन खावंद सो ध्रक जमारा ।। हो तूं तो बाबल मुज परणावो हो ।। १ ।।

आत्मा कन्या,बचन बोली,की,अब मुझे मायका और यह संसार कडुवा लगता है। आत्मा कहती है,दुल्हें के बिना मेरा संसार में रहना धिक्कार है इसलिए हे पिता,अब मेरी शादी कर दो। ।।१।।

अब मुज समझ बोहोत ऊर आई ।। बिना खावंद किम जीऊंरी माई ।।
सतगुरू पास अकल बोहो पाई ।। अब मेरो अेळ जमारो जाय हो ।। २ ।।

अब मेरे हृदय में,बहुत ही समझ आ गयी। दूल्हे के बिना,मैं जिवीत कैसे रहूँ?सतगुरू के पास से मुझे दूल्हे के संबंध में बहुत ही अक्कल मिली। अब मेरी यह उमर बेकार जा रही है।।२।।

मेरी साईया के लड़का होई ।। बागा हे थाळ अनाहद सोई ।।
अणंभे गुळ बटीजे लोई ।। हो अेतो सेज समाध समावे हो ।। ३ ।।

मेरी बराबरी के लड़कियों को बच्चे हो गये,उनके अनहद की थालियाँ बज गयी,(लड़का जन्म लेता है,तब काशे की थाली बजाते है। उसी प्रकार अनहद की थाली बज गयी और अनुभव का गुड़,लोगों में बाँट रहे है। दूसरे मेरी बराबरी के संत अपने लिए हुए अनुभव का ज्ञान लोगों को बाँट रहे है याने बता रहे है,तथा दूसरे सहज समाधी में समा रहे है। ।।३।।

केहे सुखराम ब्याव अब कीजे ।। के मेरो दोस सराप सहीजे ।।
गुण ओगण सब छाड़ दे दीजे ।। अब तूं तो बेगो लगन लिखाय हो ।। ४ ।।

सतगुरू सखरामजी महाराज कहते है कि,आत्मा कन्या,सतगुरू बाप से बोली की,अब मेरी लगन कर,लगन करता नहीं तो,मेरे दोषों के बदले,मेरा श्राप सहन कर। मेरे गुण और अवगुण सभी छोड़ दे। अब तूँ तो मेरी लगन जल्दी पंडित के पास से लिखवा ले। ।।४।।

२१०

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

क्या मै करूँ उपाई

क्या मै करूँ उपाई ओ संतो ।। क्या मे करूँ उपाई ।।
बंक नाळ होय ऊलटा चडीया हुँ ।। तोई मुज धिर न आई ।।टेर।।

संतो,मैं बंकनाळ के रास्ते से उलटकर त्रिगुटी में चढ गया फिर भी मेरे मन की उदासी नहीं जा रही है। अब मैं क्या उपाय करु?जिससे मेरे मन को सबुरी आएगी ।।टेर।।

तिस हजार कथी हम बाणी ।। ध्यान त्रकुटी लागो ।।
ओजूं मन में लेरां ऊटे ।। भरम सकळ नहीं भागो ।।१।।

मैंने तीस हजार श्लोक कथे है। मैं त्रिगुटी में पहुँच गया हूँ फिर भी मेरे मन में काल के परे का मुलुक मिलेगा या नहीं इसकी रह रहकर लहरे याने शंका उठ रही है और बार-बार भ्रम उठ रहा है। मेरा भ्रम पुर्णत: नहीं भाग रहा है ।।१।।

ऊझड़ पेंड़ा मिठ्याहन मेरा ।। दाय कछु नहीं आवे ।।
चेंला ज्ञान गिरहे अर त्यागी ।। अेको मन नहीं भावे ।।२।।

उजाड याने ठिकाने पर न पहुँचनेवाले रास्ते से चलना मेरा अभी भी छुटा नहीं। मुझे वेद, शास्त्र,पुराण आदि माया की ज्ञान की बातें सुहाती नहीं। गुरु बनकर चेले बनाना और उसको ज्ञान बताना,ग्रहस्थी बनकर कुटुंब परिवार के सुख लेना या स्त्री-पुरुष,धनसंपदा त्यागकर त्यागी बनना इसमें से एक भी चीज मेरे मन को भाँती नहीं। ।।२।।

सांख जोग और नौद्या भक्ति ।। अेको मन नहीं धिजे ।।
सेंस भुजा धर साहेब आवे ।। तोइ मेरो मन नहीं रिजे ।।३।।

ब्रम्हा का सांख्ययोग,महेश का हटयोग,विष्णु की नौद्या भक्ति इनमें से एक से भी मेरा मन रिझता नहीं। यहाँ तक की साहेब हजार भुजा धारण कर मेरे सामने खडा हुआ तो भी

मेरा मन खुश होने को तयार नहीं। ।।३।।

जंतर मंतर बेद पुराणा ।। पढ पढ सब तज काया ।।
ओऊँ जाप अजपो कहिये ।। ये मुज दाय न आया ।।४।।

जगत में पर्चे चमत्कार करनेवाले जंतर,मंतर,चार वेद,अठरा पुराण सिख सिख कर और वैसी क्रिया कर करके पर्चे पाए परंतु उन पर्चो में मेरा मन जरासा भी कभी नहीं रीजा। इसलिए मैंने वह सारी चीजें त्याग दी। ओअम् अजप्पा का जाप करके संखनाळ से भृगुटी में घर किया फिर भी मेरा मन उदास ही रहा,इसकारण मुझे भृगुटी का घर रहने के लिए जरासा भी पसंद नहीं आया ।।४।।

के सुखराम अेक मोय सूझे ।। कोइ देस मुलक म्हारो आगो ।।
ईण कारण आ बिरह ऊदासी ।। ध्यानज म्हाने लागो ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरा देश याने मुलक त्रिगुटी मुलुक से न्यारा है वह मुझे अभीतक मिला नहीं। यह समझ कुद्रती मुझे आने के कारण मुझे बिरह एवम् उदासी है यह मेरे समझ आ रही है । ।।५।।

२३४

।। पदराग बसन्त ।।

मेरे लागी हो उर शबद भाल

मेरे लागी हो उर शबद भाल ।। क्या करिये हो जुग क्रित ख्याल ।।टेर।।

मेरे हृदय में मेरे गुरु के ज्ञान शब्द के तीर लगे है। अब मेरे मन को संसार का यह कृत्रिम सुखों का खेल भाँता नहीं,झूठा लगता अब मैं इन संसार के कृत्रिम सुखों का क्या करुं? ।।टेर।।

जे मन घेर राखूं उर माँही ।। तो तन टूक टूक होय जाय ।।
मेरे बस नहिं ओ मन ।। होय ब्रम्ह धाहाँ पुकारे जोय ।।१।।

मैं मेरे मन को घेर घेरकर संसार में लगाता तो भी वह संसार में जरासा भी नहीं रमता। मेरे तन को संसार में लगाता तो मेरे तन के टुकडे टुकडे होते याने शरीर पर सहे न जानेवाले कष्ट पडते। इसतरह मेरा मन और तन मेरे वश नहीं रहते। मेरी बिरह रामजी के लिए धाय मारकर याने दहाड मारकर(जोर जोर से चिल्लाकर)पुकारती। ।।१।।

अकबक जीव भयो मन मोय ।। जुग कुल लाज न आवे कोय ।।
रूम रूम कहे राम राम ।। कब हर परसुं निजधाम ।।२।।

मेरा जीव और मन रामजी पाने के लिए बेभान हो गया। इसे कुळ,जगत की कुछ भी लाज शर्म नहीं रही। मेरे जीव,मन को कुल और जगत की कोई मोह ममता नहीं रही। मेरा रोम रोम राम राम कहता और मैं कब निजधाम पहुँचूँगा इसकी सदा फिकीर करता। ।।२।।

जुग मे सेण न दिसे कोय ।। सब नर नारी जमा सम होय ।।
के सुखराम गुरू धिन क्राय ।। के रामस्नेही जे जुग माँय ।।३।।

पुरे संसार में मेरा भलाई करनेवाला सतगुरु और रामस्नेही सिवा कोई सज्जन दिखाई देता नहीं। जगत के कुल से लेकर सभी नर-नारी जम के समान दिखाई देते। जैसे जम जीवों को होनकाल त्यागने देता नहीं,होनकाल में मोह ममता के चक्कर में लगाकर होनकाल में हि अटका कर रखता वैसे ही मेरे कुल परिवार एवम् जगत के लोग निजधाम जाने देते नहीं,मोह ममता कर होणकाल में हि रखना चाहते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरे सतगुरु और मेरे रामस्नेही मैं होणकाल त्यागकर निजधाम जाऊँ यह चाहणा रखते इसलिए मेरे सतगुरु और सभी रामस्नेही धन्य है,धन्य है। ।।३।।

२३६

।। पदराग धमाल ।।

मेरे प्रितम प्यारे कब मिले हो

मेरे प्रीतम प्यारे कब मिले हो ।। जे मेरा धुर खावंद हे वो सोय ।।टेर।।

मेरे प्रीतम प्यारे आप मुझे कब मिलेंगे?आदिसे जो मेरे पति है,वे मुझे कब मिलेंगे?।टेर।

प्रित पुकार पुकार पुकारे ।। ब्रहन रही बिल लाय ।।

रात दिवस कळ ना पडे. हो ।। उडत पांख बिन जाय ।।१।।

उनसे ही प्रीती लगी है। वह प्रीती पुकार-पुकार करके,पुकार रही है और विरनी तड़फड़ा करके रो रही है,बिलख रही है। रात-दिन चैन नहीं पड़ता,यह तो पंख के बिना उड़-उड़कर मालिक के पास जाती है। ।। १ ।।

सुध बुध सबे भूल गई सारी ।। अेक अकल आ मांह ।।

रामही राम पुकारे निस दिन ।। अेक पीव की चाह ।।२।।

सुधि और बुद्धि सभी भूल गई। सुधि भूलकर,बेसुध हो गई और बुद्धि भुल,निबुद्धि हो गई। सिर्फ यह एक अक्कल रह गई है कि,रात-दिन राम ही राम नाम को पुकार करती और एक पीव(मालिक की)रामजी से मिलने की चाहत अन्दर है। ।।२।।

अन जळ तजा निंद नहिं आवे ।। सूक रहयो तन ज्योय ।।

कहे सुखदेव इण जगत में हो ।। धिग जनम हे मोय ।।३।।

अन्न और पानी ये खाना-पीना छोड़ दिया और नींद भी आती नहीं और यह सारा शरीर सूख रहा है यह देख लो। इस संसार में मेरा जन्म लेना धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।।३।।

२४२

।। पदराग मिश्रित ।।

म्हारो ने संदेसो

म्हारो ने संदेसो साहेब सांभळो ।। बिनाजी सुणीयां रो,नहीं ये सूल ।।

ब्रहन बिचारी तन कूं छाडसी ।। रही ऊरध मुख झूल ।। टेर ।।

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि,हे परमात्मा,मेरा संदेशा सुनो,आप नहीं

सुनेंगे तो मेरा दु:ख कैसे मिटेगा?बिरहन कहती है कि मेरा दु:ख आपने नहीं सुना तो मैं शरीर को त्याग दुँगी। मैं उन्धे मुँह झूल रही हुँ। ।।टेर।।।

बरस अठारा हर बिना काडीया ।। म्हारे आस रही घर माय ।।
अब तो जोगण हर होय जाव सूं ।। बस्तर देऊँजी बगाय ।। १ ।।

मैंने आपके प्राप्ती के बिना अठारह बरस निकाले है। माया के कर्मो मे आशा रही। अब तो मै हे परमात्मा,करमो से अलग होकर विज्ञान बैरागी हो जाऊँगी। बस्तर याने त्रिगुणी माया के कर्म त्याग कर बैरागी बन जाऊँगी । ।।१।।

काँयेतो ढोल्यो हर नहीं घालता ।। भेद न देताजी मोय ।।
बीना तो दिटी साहेब चीजरो ।। म्हाने दु:ख दालद नहीं होय ।। २ ।।

हे परमात्मा,आप ढोल्या याने मनुष्य शरीर नहीं देते और सतशब्द कैसे प्रगटता है उसका भेद नहीं देते तो बिना देखी हुई चीज का मुझे दु:ख और पश्चाताप नहीं होता। ।।२।।

सबदां कलेजो राम जी बीदियो ।। म्हारे करोत बहे उर माय ।।
नख चख साले रामजी निस दिना ।। मो सूं हर बिना रयो नहीं जाय ।। ३ ।।

शब्द से मेरा कलेजा छेदे गया और मेरे हृदय में करवत बहने जैसा दर्द होने लगा। मेरे नख से चख तक रात-दिन यह दर्द हो रहा है। मेरे से परमात्मा के बिना नहीं रहा जाता है। यही विरह लगी रहती है कि,हे परमात्मा,आप कब मिलोगे?।।३।।

अब तो जग मे वो हर नहीं आवड़े ।। आप मिलोनी आय ।।
ईण तो अपराधी दुष्टी जीवरो ।। जलम अकारथ जाय ।। ४ ।।

हे परमात्मा,अब त्रिगुणी माया के सुख मुझे नहीं सुहाते इसलिये सतस्वरुपी रामजी आप आकर मिलो। इस अपराधी और दुष्ट जीव का जन्म आपके मिले बिना बेकार जा रहा है। ।।४।।

अेकण मेल दूजे चडी ।। तीजी खड़ी छू जी आण ।।
बजर दरवाजा हर नहीं ऊघडे ।। रया क्राराजी ताण ।। ५ ।।

एक महल याने पिंड, पिंड से दुजा महल याने खंड में,मैं चढी और तिसरे ब्रम्हंड पर आकर खडी हुई परन्तु बजर पोल का दरवाजा मुझसे नहीं खुलता। ये दरवाजा बहुत मजबूत लगा हुआ है। ।।५।।

चेन तमासा हर दिखलाय के ।। मत डेहकावोजी मोय ।।
किरपा करोनी जन पर दयालजी ।। मोय द्रसण दो पट खोय ।। ६ ।।

हे परमात्मा,माया के चैन तमाशा बताकर मुझे मत बहकावो। हे दयालु,आप मेरे पर कृपा करो और मुझे पट खोलकर दर्शन दो। ।।६।।

जन सुखदेव हरजी सूं बीणती ।। सुणज्योजी सुरत लगाय ।।
अमर लोक जी साहेब आपरो ।। म्हने बडोजी देखण रो चाव ।। ७ ।।

आदि सतगुर सुखरामजी महाराज बोले कि,हे परमात्मा,मेरी प्रार्थना को ध्यान से सुनो। आत्मा कह रही है,मुझे आपके अमर लोक को देखने की बहुत इच्छा हो रही है। ।।७।।

२७९

।। पदराग गुड ।।

पिया मै दोरी हो

पिया मै दोरी हो ।। प्रगटो दीन दयाल ।। पिया मै दोरी हो ।।

ओ दिन दुभर जाय ।। पिया मै दोरी हो ।।टेर।।

आत्मा नारी परमात्मा पति से कहती है की,पति मालिक मैं आपके बिना बहुत दु:खी हूँ। हे दिनदयाल,आप प्रगट होकर मुझसे मिलो। मेरे दिन बहुत कठीण बित रहे है। मैं आपके बिना बहुत दु:खी हुँ। ।।टेर।।

प्रेम लग्यो हर नाम सूं हो ।। मै भूली खानर पान ।।

दरस दीज्यो साइयाँ ।। मुज अंतर आतम राम ।।१।।

मुझे हरनाम से प्रेम लगा है। इस प्रेम से मैं खाना पिना भुल गई हूँ। हे मेरे आत्मा के रामजी,आप मुझे मेरे अंतर में दर्शन दो। ।।१।।

रटत रट खाती भई हो ।। जे बिरह कल राय ।।

खिन पल जोऊँ बाटड़ी प्रभू ।। अत प्रगटो आय ।।२।।

आपका नाम रटते रटते आपको पाने के लिए उतावली हुई हुँ। मेरी बिरह कल राय। मैं क्षण क्षण में पल पल में आपकी बाट देख रही हुँ,आप जल्दी आकर प्रगटो। ।।२।।

तूम बिन सब सुखं झूट हे प्रभू ।। बिरहन नहीं सुहाय ।।

प्राण तजेगी साईयाँ ।। के दर्सण दीज्यो आय ।।३।।

हे प्रभु,तुम्हारे बिना विषयोंके सभी सुख झूठे है। यह मेरे बिरहणी याने आत्मा को पसंद नहीं आते। आपने दर्शन नहीं दिया तो हे प्रभु,मैं मेरा प्राण त्याग दूँगी। ।।३।।

बाट निसोदिन देखता प्रभू ।। दिन दिन निसऱ्या जाय ।।

ब्रहन कूं डर ऊपजे प्रभू ।। बोहो ओगण मुज माय ।।४।।

प्रभुजी,आपकी अंतर में बाट देखते देखते रात-दिन व्यतीत हो रहे है। मुझे आकर मिलते नहीं इसलिए मैं बिरहणी को मेरे में कोई अवगुण हैं क्या?यह डर लगता। ।।४।।

मेरा ओगण पर हरो प्रभू ।। तेरा बिड़द निभाय ।।

सरणे आया साईयाँ ।। सो तो अजिया कूं फळ खाय ।।५।।

मुझमें जो भी अवगुण होंगे उसे मत देखो,उसे नहीं देखे सरीखा करो और आपका अवगुणोंको माफ करने का बिड्द निभाओ। जैसे सिंह के शरणे बकरी गई थी। उस बकरी को सिंह हाथी पर बैठाकर अच्छे अच्छे नाजुक नाजुक फल खिलाता था ऐसे मैं भी आपके शरण आयी हूँ। ।।५।

आज क कालक साँईयाँ हो ।। भावे मिल जुग माय ।।

तन मन सूंप्यो आप कूं प्रभू ।। सतगुरू सरणे जाय ।।६।।

हे साईयाँ,आज कल में मिलो या आपको जब अच्छा लगे तब मिलो। प्रभुजी,मैं सतगुरु के शरण में जाकर आपको मेरा तन मन अर्पण किया हूँ। ।।६।।

तुम मिलीया बिन बाहिरो हो ।। ध्रग जनम जुग मांय ।।
कंथ बिहुणी सेज मे प्रभू ।। रोवत रेण बिहाय ।।७।।

प्रभुजी,आपके मिले बिना मेरा संसार में जन्म लेना धिक्कार है। जैसे स्त्री का पति के बिना सेजपर रोते रोते रात व्यतीत होती उसी तरह तुम्हारे बिना मेरी गती हुई है। ।७।

अंतर गत की पीड़ ने प्रभू ।। किन सुं कहिये सुणाय ।।
जन सुखदेवजी बीनवे ।। अब प्रगटो अंतर मांय ।।८।।

प्रभुजी,मैं मेरे अंदर की पिडा किससे कहुँ?हे प्रभु,आपसे बिनती करती हूँ अब आप बिना विलंब अंतर में प्रगटो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।८।।

२९६

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

राम मिल्या बिन हरजन दुखिया
राम मिल्याँ बिन हरजन दुखियां ।।
यूँ हि अवसर बीता ।। मन दुखिया बिन प्रीत साधो ।।टेर।।

घट में रामजी मिलते नहीं जब तक हरी के जन रामजी पाने के लिए दु:खी रहते,उदास रहते और अपना समय फिजुल बिते जा रहा इसका दु:ख करते रहेंगे। जैसे हर किसी का मन जिससे स्नेह है वह स्नेही नहीं मिलता तब तक उदास रहता वैसेही रामजी के जन रामजी से मिलने के लिए उदास रहते। ।।टेर।।

जळ बिन सब ही बागज दुखिया ।। पच दुखिया बिन फी था ।।
नर बिन नारी बोहोत बिड़ाणी ।। रिष दुखिया बिन गीता ।।१।।

जैसे बाग बगीचा जल बिना दु:खी होकर सुकने लग जाते। पच दु:खीया बिन फी था?पति मिले बगैर पत्नि दु:खी रहती। ऋषि ज्ञान ग्रंथो के बिना दु:खी रहते वैसे हरिजन रामजी के बिना दु:खी रहते। ।।१।।

अफूं बिनाँ ज्यूँ अमली दुखिया ।। दाता दु:खी धन रीता ।।
रेण बिणा जूं गुघु दुखिया ।। भूप दुखी बिन जीता ।।२।।

अमली अफु पाए बिना दु:खी रहते। दाता दान करने के लिए धन नहीं रहा तो धन पाने के लिए दु:खी रहते। उल्लु अंधेरे रात के प्रतिक्षा में दु:खी रहता। लढाई में राजा शत्रु को जीत पाने के लिए दु:खी रहता वैसे हरीजन रामजी पाने के लिए दु:खी रहते। ।।२।।

मीठा जळ बिन सायर दुखिया ।। चंद दु:खी बिन हीरा ।।
जन सुखराम रात दिन दुखिया ।। लगी सब्द की पीरा ।।३।।

सागर मीठे पानी के लिए दु:खी रहता याने अपना जल कोई भी पिता नहीं इसलिए

सागर दु:खी रहता। चाँद उसके प्रकाश से सदा हीरे नहीं बना सकता इसलिए दु:खी रहता ऐसे ही आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हरीजन शब्द पाने के पिछा से रात-दिन दु:खी रहते। ।।३।।

३०५

।। पदराग गुड ।।

सब बिध सारण काम

सब बिध सारण काम ।। पिया मुझ दरसण दिजे हो ।।

ओगण गारी रा पीव ।। पिया मोय दरसण दीजे हो ।। टेर ।।

प्रितम(पती,मालिक),तुम ही सभी विधि के काम निपटानेवाले हो। मुझे आकर दर्शन दो। मैं अवगुणो से भरी हुयी अवगुणी हूँ। मेरे प्रितम मुझे दर्शन दो। ।। टेर ।।

रूतवंती रूत ऊतरे प्रभू ।। ब्याकूळ भयो सरीर ।।

बेगा बेग पधारज्यो प्रभू ।। आतम धरे न धीर ।। १ ।।

जैसे ऋतुवंती स्त्री का,ऋतुकाल में,शरीर व्याकुल हो जाता है। तो प्रभुजी,आप बेगी-बेगी जल्दी-जल्दी आईये। प्रभुजी,आपके बिना,आत्मा धीरज नहीं धारण करती है याने सबुरी नहीं करती। ।।१।।

जळ बिन नागर बेलडी प्रभू ।। पोप फूल कुमलाय ।।

तुम बिन आतम सुंदरी प्रभू ।। यूँ दु:ख अंतर मांय ।। २ ।।

पानी के बिना नागवेल मुरझा जाती है और दूसरे प्रकार के फूल और पुष्प भी मुरझा जाते है। उसी प्रकार से यह आत्मा सुन्दरी प्रभुजी,आप के बिना अंदर से दु:खी हो रही। ।।२।।

जळ खूटा सर सुकीये हो ।। दादुर दु:ख अपार ।।

मीन दु:खी जळ बाहरी प्रभू ।। तुम बिन आतम नार ।। ३ ।।

जब पानी समाप्त होकर सरोवर सूख जाता है उस समय सरोवर के मेढ्कों को अपार दु:ख हो जाता है और पानी के बिना मछली मर जाती है। उसी प्रकार प्रभुजी,आपके बिना यह आत्मा नारी बहुत ही दु:खी है। ।। ३ ।।

पपयो पिव पिव करे प्रभू ।। चंदर दिष्ट चकोर ।।

जन सुखिया युँ आतमा रे ।। लगी ब्रम्ह सुं डोर ।। ४ ।।

चातक पक्षी,पानी के लिए,पीव-पीव करता है और चकोर पक्षी,चन्द्रमा में दृष्टी लगाता है। (वह दृष्टी,चन्द्रमा पर से हटाता ही नहीं।)आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि, उसी प्रकार से इस आत्मा की भी सतस्वरुप ब्रम्ह से डोर लगी हुई है। ।।४।।

३६५

।। पदराग बिहगडो ।।

संतो मै तो करम अभागी

संतो मै तो करम अभागी ।।

पूरब करम इस्या मुझ मांही ।। दुबध्या अजुहन भागी ।।टेर।।

संतों मैं नीच कर्मी हूँ। मैं परमसुख का पद पाने के लिए अभागी हूँ। मेरे पुर्व जन्मों के कठिन नीच कर्म है इसकारण मैं सतगुरु समझ नहीं सका। मैं सतगुरु को जगत के बराबरी का मनुष्य ही समझा यह दुबध्या होने के कारण मेरे सतगुरु मेरे महादु:ख काट देनेवाले समर्थ होने के पश्चात भी मेरे दु:ख काट देंगे यह मेरी दुबध्या अभी तक भी नहीं भागी। ।टेर।

सतगुरू मेरे किरपा किनी ।। घर बैठा पद दीया ।।
मेरा लछ इस्या उर मांही ।। दरसण जायन किया ।।१।।

सतगुरु ने मुझे दया कर घर बैठे घट में परमपद दिया परंतु मेरे दिल में सतगुरु के बारे में दुबध्या यह नीच लक्षण थे इसलिए सतगुरु घर पर आने पर भी मैंने उनके दर्शन नहीं किए।।१।।

ज्यां पद पुरण मोकुं दिया ।। भरम भाँज समझाया ।।
वाँ कूं छाड़ किया गुरू ओरी ।। अेसा करम कमाया ।।२।।

जिस सतगुरु ने मुझे परमपद दिया मेरे भ्रम तोड्कर समझाया ऐसे सतगुरु को त्यागकर मैंने अन्य कनफुंके गुरु धारण किए। ऐसे ऐसे मेरे निच मती देनेवाले पूर्व के कमाए हुए कर्म है। ।२।

वां मो सूं गुण अेसा कीया ।। जम दावा सब मेटया ।।
धि्रगधि्रग जो जुग जनम हमारो ।। सनमुख जाय न भेटया ।।३।।

मेरे सतगुरु के दया गुण से मेरे अनंत जन्मों के जम के दावे कट गए फिर भी मैं मेरे सतगुरु को उनके सन्मुख जाकर नहीं मिला। मैंने मेरे अनमोल मनुष्य देह को अन्य गुरु के कर्मकांडोंमें,चमत्कारोंमें लगाकर गमाया। मेरे ऐसे मनुष्य जन्म को धिक्कार है,धिक्कार है। ।३।

धिन सतगुरू धिन समरथ सामी ।। मेरी कसर न जोई ।।
मै तो बेल बोहोत बिध हुवा ।। गुरू बिरच्या नी कोई ।।४।।

मेरे सतगुरु धन्य है,मेरे समर्थ स्वामी धन्य है। मेरे सतगुरु ने मेरी नीच हरकते नहीं देखी। मेरे मन में सतगुरु से दुबध्या आने से मैं तो सतगुरु से भ्रमीत बहुत बार हुआ परंतु मेरे सतगुरु मेरे से जरासे भी दूर नहीं गए। मुझपर दया करने में जरासे भी नहीं बदले ।।४।।

के सुखराम मूवा मै डोलू ।। जनम अकाजा भाई ।।
जब लग मेरे गुरू की सेवा ।। मो सूं बणीयन काई ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मैं जिवीत होकर भी मुर्दे समान जी रहा हूँ। मेरा जन्म व्यर्थ गया। मेरे से जब तक गुरु ने बताई हुई सतस्वरुप की भक्ति होती नहीं तब तक मैं जिवीत रहा तो भी मुर्दे के समान ही जी रहा हुँ ऐसा सतज्ञान मुझे समझ रहा। ।।५।।

७६

|| पदराग बिलावल ||

भगत करावो दास सूं

भगत करावो दास सूं || तो बिरह दो चेरी ||

तलप बीना प्रभू ना सजे || भगती जुं तेरी ||टेर||

हे साई,मैं आपका दास हुँ। मुझसे आपकी भक्ति कराओ। मुझमें आपके लिए विरह याने प्रेम प्रीत प्रगटाओ। मुझमें भक्ति करने की शुरवीरता प्रगटाओ। तलप बिना तेरी भक्ति किसीसे सूझ नहीं सकती इसलिए आप मेरे घट में आपकी भक्ति करने की तलप प्रगट करा दो। ||१||

बिरह बीना तेरी भगत सूं || प्राणी दु:ख पावे ||

ज्युं निरबळ डांडी चले || मुख ना जन भावे ||१||

मुझमे आपकी भक्ति करने की तलप प्रगट नहीं हो रही इसलिए मेरा प्राण दु:ख पा रहा। जैसे निरबल डांडी चले || मुख ना जन भावे । (अर्थ लागला नाही.)||२||

में मांगूँ बेराग कूं || किरपा करो सांई ||

बिन तरळे ईण जीव सूं || सिंवरण हुवे नांई ||२||

हे साई,मैं आपसे मेरी कुल परिवार,धन,राज से मोह ममता भंग होवे ऐसा बैराग की भिख माँगता हुँ। हे साई,आप कृपा करके मुझमें कुल परिवार के मोह ममता को त्यागने का बैराग प्रगट करा दो। मेरे जीव से आपसे बिना विरह प्रगट हुए आपका स्मरण होता नहीं ||३||

सूरातन अंग भेजीये || मतवाळो किजे ||

के सुखदेव अंग बाहीरी || भगती नहीं दीजे ||३||

मैं आपकी भक्ती में मतवाला हो जाऊँगा ऐसा मेरा मन शुरवीर कर दो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ----(अर्थ लागला नाही.)||४||

७७

|| पदराग हिन्डोल ||

भगत करे जन सूरा हो

भगत करे जन सूरा हो ||

नहि कायर का काम साधो || भगत करे जन सुरा हो ||टेर||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जैसे जग में कायर तथा शूरवीर फौजी रहते वैसेही भक्ति में कायर तथा शूरवीर संत रहते है। कायर फौजी यह जंग कभी जीत नहीं सकता वैसे माया से डरनेवाला मनुष्य ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति तथा सभी अवतार ये कोपेंगे क्या?ऐसा डर रखनेवाला डरपोक काल को कभी जीत नहीं पाएगा परंतु शूरवीर फौजी यह जंग कैसे भी जबर रही तो भी वह अपनी गर्दन कटे तबतक जंग लढता और बैरीयो को पूर्णत: नष्ट करके जंग जितता। इसीप्रकार शूरवीर संत काल के साथ जंग कितनी भी जबर रही तो भी वह अपने तन पे पडनेवाले दु:ख,माता-पिता,पत्नी को

होनेवाले कष्ट का दु:ख इसकी फिकीर न करते सतस्वरुप विज्ञान की भक्ति करता। काल को जीतकर होनकाल का पद त्यागता और महासुख के अमरापूर जाता। ।।टेर।।

तन धन की सो आस न राखे ।। मस्त हुवे मगरूरा हो ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जैसे शूरवीर फौजी युध्द में लढने जाते समय अपना शरीर मिट जाएगा तथा शरीर मिटने के बाद कुटूंब परिवार के लिए रखा हुआ धन जगत के लोग हजम कर लेगे और कुटुंब-परीवार को खाने-पिने के फाके पडेंगे इसकी जरासी भी सोच न करते जंग लढने मिल रहा इस अभिमान के साथ मस्त होकर युध्द लढता। इसीप्रकार शूरवीर संत वैराग्य विज्ञान भक्ति करते समय ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ति तथा देवी-देवता यह रुठेंगे और जीव को तकलिफ देंगे इसकी जरासी भी चिंता,फिकीर न रखते काल से मुक्त होने मिल रहा है इस गर्वके साथ मस्त होकर सतस्वरुप की धुव्वाधार याने(किसीका विचार न करते हुए)भक्ति करता। ।।१।।

कपट कळेजो काट बगावे ।। सांसो सीस तन दूरा हो ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,शूरवीर गर्दन कटनेपर भी धुव्वाधार लढता और युध्द जितनेपर अपना कलेजा अपने हाथ से काटकर आसमान में(उछालता)फेकता और शरीर सदा के लिए त्यागता ऐसे शूरवीर को देवकन्या विवाह करके ले जाती। इसीप्रकार शूरवीर संतजन होनकाल ने बनाए हुए सभी काल के चरित्रोंसे धुव्वाधार लढता और ब्रम्हा,विष्णु, महेश,शक्ति के सुखों से जुडे हुए कपटी कलेजे को पूर्णत: नष्ट करता और सतस्वरुप पार्षद के साथ महासुख के अमरापूर जाता। जैसे शूरवीर फौजी जंगमें मरने की फिकीर अपने मन,तन से पुरी निकालकर दूर डाल देता और जंग लढता। इसीप्रकार शूरवीर संत कुटुंब परिवार तथा खुद के उपर पडनेवाले दु:खो को तन से निकाल देता और काल के साथ भारी जंग लढता। ।।२।।

मात पिता की बात न माने ।। नार सनेही कूरा हो ।।३।।

जैसे शूरवीर फौजी माता-पिता तथा पत्नि से मिलनेवाले सुखों की बातों में न अटकते युध्द में निकलता वैसेही शूरवीर संत माया माता और ब्रम्ह पिता तथा रिध्दी-सिध्दी पत्नि के परचे चमत्कारों की बात न मानते याने चमत्कारों के सुखों में न अटकते वैराग्य विज्ञान ज्ञान के संतों के परचे सुनकर पश्चिम के रास्ते से दसवेद्वार में चढाई करने निकलता। ।।३।।

बाजा सुण सुण बोहो छोहो आवे ।। बरसे मुख पर नूरा हो ।।४।।

युध्द के बाजे,दुंदुभी सुन-सुनकर शूरवीर को बहुत ही उत्साह चढता है और युध्द के बाजे सुनकर शूरवीर के चेहरे पर नूर याने तेज आ जाता है। इसीप्रकार विज्ञान भक्ति करनेवाले शूरवीर संत की दशा अणभै देश की वाणी सुन-सुनकर हो जाती है ।।४।।

के सुखराम संत जन सोई ।। बेण कहे मुख पूरा हो ।।५।।

जैसे शूरवीर फौजी शत्रु को खतम् करने के वचन मुख से बोलता है और वैसे के वैसे पुरे करता है। ऐसेही शूरवीर संत काल को मारकर दसवेद्वार साई के दरबार में पहुँचने की चाहना दिल में रखता है और वैसी के वैसी दिल की चाहना पूरी करता। ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,स्त्री-पुरुषों को बता रहे है ।।५।।

१४५

।। पदराग हिन्डोल ।।

हरजन हरगुन गावे हो

हरजन हरगुन गावे हो ।।

नाँव निसाण रूपावे साधो ।। हरजन हरगुन गावे हो ।। टेर ।।

हरजन हर याने रामजी का गुण गाते है और रामनाम का लक्ष्य बनाते है। हर जन ये तो रामजी का गुण गाते है। ।। टेर ।।

बोहो दु:ख ताव पडे शिर आई ।। सुख संपत जे जावे हो ।। १ ।।

उनके सिर पर अनेक प्रकार के दु:ख और संकट ताप आकर पड़ते है और उनकी सुख और संपत्ती सभी क्रुर लोग छिन लेते है तो भी वे रामजी का ही गुण गाते है। ।।१।।

जे ओ जगत रूस रहे सारो ।। घर कुळ गाँव छुडावे हो ।। २ ।।

यह सारा संसार रूठ जाता है और घर कुल और गाँव छुड़ा कर बाहर निकाल देते है तो भी वे संत,रामजी का ही गुण गाते है। ।। २ ।।

देश निकाळो जे दे राजा ।। तो राम नाम लिव लावे हो ।। ३ ।।

यदी देश का राजा,देश निकाला दे देगा।(अपने देश से हद्दी के बाहर निकाल देगा)तो भी वे संत,रामनाम से ही लव लगायेंगे।(राम नाम छोड़ने के लिए जोधपुर के विजय सिंह राजा ने हरकारामजी और मनसारामजी(रामनामी नागोरवालो को)रामनाम छोड़ो या चौतीस हजार दंड दो ऐसा दंड दिया था। यह दंड सुनकर उन्होंने रूपये की थैली,गाड़ी भरकर लाकर,राजा के आगे डाल दी और जाते समय राजा को,रामराम करके रवाना हुए तब राजा बोला की,तुम इतना दंडीत करने पर भी राम-राम करते हो क्या?तब हरकारामजी बोले,हाँ यह दंड हमने किसलिए दिए रामनाम छोड़ते नहीं,इसलिए हमने दंड दिए। यदी हमने रामनाम लेना छोड़ दिए होते,तो तुम दंड किसलिए लेते और हम भी दंड किसलिए देते। यह रामनाम नहीं छोड़ने के लिए ही,हमने दंड भरा है,फिर हम रामनाम कैसे छोड़ेगे?राजा ने रामनाम न छोड़ने के लिए इन दोनो को देश के बाहेर जाने का, आदेश दे दिया। ये दोनो राजा से बोले हम तुम्हारे राज्य में,पानी भी नहीं पीयेंगे। तुम्हारे राज्य के पार होने में,दस दिन लगे या पन्द्रह दिन लगे। जो रामनाम लेने की मनाही करता,उसके राज्य में हम पानी भी नहीं पीयेंगे। ।।३।।

जाँ पूळ आण चंपे नर कोई ।। वो तन छोह चड़ावे हो ।। ४ ।।

जिस पल में याने समय में कोई मनुष्य शुरवीर संत को रामनाम छोड़ने के लिए डराअेगा,

दबायेगा तो वे अपने शरीर में रामनाम लेने के लिए और भी उत्साहित होते है और रामनाम लेने में जरासा भी दबते नहीं। ।। ४ ।।

के सुखराम साच जन सोई ।। राम नाँव लिव लाते हो ।। ५ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो रा नाम की लव इसप्रकार से लगाते है,वही सच्चे संत है। ।। ५ ।।

१५१

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

हरिजन सूरा हरिजन सूरा

हरिजन सूरा हरिजन सूरा ।। भीड़ पड़या लिव दूणी बे ।।टेर।।

हरीजन शूरवीर होते है शूरवीर होते है। उनके उपर संकट पडने पर उनकी रामजी से लिव घटती नहीं बल्की दुनी होती। ।।टेर।।

सांकळ तोख जडे. गळ मांही ।। फेर भागसी मारे बे ।।

दुष्टि ही ताव बोहोत बिध देवे ।। हर हर इधक पुकारे बे ।।१।।

दुष्ट लोग हरिजन को अती यातना देते। जेल सरीखे अंधेरे कोठडी में डालते और मारते। लोहे के सिकडी में बांधकर गले में तोख बांधते। ऐसे हरिजन को बहुत सारे कष्ट देते फिर भी हरिजन रामनाम पुकारना न छोड्ते अधिक से अधिक रामनाम पुकारते ऐसे हरिजन शूरवीर होते है। कबीर साहेब के गले को सिकंदर बादशाह ने सिकड से बांधकर पानी में डुबाया था और रामनामी महाराज हरकारामजी और उनके भाई मनसारामजी और बाल–बच्चेतक को,जोधपुर के राजा ने,अंधेरी कोठरी में डाला था। उन सभी को पैंतीस दिनतक अन्न और पानी,कुछ भी नहीं दिया था और उनके बाल–बच्चों ने भी,अन्न,पानी कुछ भी नहीं लिया उन्होंने राम नाम लेना छोडा नहीं ।।१।।

देस मुलक घर बार छुडावे ।। सुत बित्त कोसर लेवे बे ।।

बोहो बिध ताव पडे सिर ऊपर ।। सुरत नाव पर देवे बे ।।२।।

संतों की पुत्र,पुत्री,पत्नि,धन,खेती,घर छिन्न लेते और मुलुख से बाहर दूर भूखे,प्यासे रहेंगे, किटक प्राणियों से धोका होगा ऐसे जंगल में निकाल देते। ऐसे ऐसे अनेक संकट हरिजन के सिरपर गुजरते फिर भी हरिजन अपनी सूरत संकटो के ओर न लगाते रामनाम पर देते ऐसे हरिजन शूरवीर होते है। ।।२।।

दूजी भीड़ पडे सिर केती ।। दिन मे सोह सोह आइ बे ।।

जबलग सास खुलासा घट मे ।। राम राम कहे भाई बे ।।३।।

दुसरे भी अनेक संकट दिन में सौ सौ बार हरिजन के सिरपर पड्ते फिर भी हरिजन उदास न होते उल्हास के साथ जब तक शरीर में साँस चलती है और शरीर में प्राण है तब तक राम राम बोलते है ऐसे हरिजन शूरवीर होते है। ।।३।।

दुख सुख सबे नाँव पर वारे ।। निछरावळ कर देवे बे ।।

ओ तन सास जीव मन चेतन ।।जाहाँ लग सिमरथ सेवे बे ।।४।।

दु:ख और सुख रामनाम लेने के उल्हास पर न्योछावर कर देते और उनके शरीर में जब तक मन है,जीव है तथा चैतन्यता है तब तक उल्हास के साथ समरथ को भजते ऐसे हरिजन शूरवीर होते। ।।४।।

ससी अर सूर पिछम दिस ऊगे ।। गंग उलटी बह जावे बे ।।
कह सुखराम तो ही जन सूरा ।। राम राम लिव ल्यावे बे ।।५।।

चाँद और सूरज पूरब से उगते और पश्चिम में डुबते और गंगा पहाड से धरती पर बहती ऐसा चाँद और सूरज पूरब के बजाय पश्चिम से उगा और गंगा धरती से पहाड के ओर उलटी बहने लगी मतलब कभी देखा नहीं इतना कष्टदायक दु:ख पडा तो भी हरिजन विचलित न होते रामनाम के लिव में गाढे रहते। रामनाम लेने से छिन्नमात्र भी लिव हटाते नहीं ऐसे हरिजन शूरवीर होते ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।५।।

१६२

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

जम जालम हे जम जालम हे
जम जालम हे जम जालम हे ।। सावधान होय लडना रे लो ।।
अबके मोसर आण बण्यो हे ।। सुध बुध कारज करणा रे लो ।।टेर।।

जम जालिम है,जम जालिम है। उससे लढाई करनी है तो होशियार होके लढना चाहिए। यम से जितने के लिए तुझे रामजी से मनुष्य देह मिला है। यह अवसर यम से लढने के लिए बहुत अच्छा आया है। अब तु सुध बुध से यम से लढने का काम कर। ।।टेर।।

सिळ साच को बक्तर पेरो ।। लीव समसेर समावो रे ।।
जरणा की ढाल जुगत सू बांधो ।। इस बिध लड़वा जावोरे लो ।।१।।

लढाई में शत्रु पक्ष से लढते वक्त अपने शरीर की रक्षा करने के लिए धातु से बना हुआ चिलखत पहनना पडता। यह चिलखत शत्रु के बाण एवम् भाले शरीर में घुसने नहीं देता और लढनेवाले को मौत से बचाता इसप्रकार संत को शील याने अपने विवाहीत स्त्री से ही संबंध रखने चाहिए अन्य किसी स्त्री से संबंध नहीं आने देने चाहिए यह सावधानी बरतनी चाहिए। यह सावधानी न बरतने पर जम संत ने पाए हुए बडे मनुष्य देह के मौके को धोका कर सकता है। लढाई में इस लोहे के चिलखत के साथ साथ अपना राजा शत्रु राजा से महाबलवान है यह चिलखत पहनता। इस चिलखत से शत्रु से लढते वक्त निडर होकर लढते आता ऐसे परमात्मा याने गुरु काल को मारने में,पराक्रम में बलवान है ऐसा विश्वास गुरु पर आना चाहिए। इस विश्वास से काल से लढते समय संत को निडरता आती है। ऐसा शील और विश्वास का चिलखत संत ने पहनना चाहिए। शत्रु पक्ष से लढने के लिए तलवार लगती ऐसे ही काल शत्रु से लढने के लिए रामनाम की लिव लगाकर भजन करने की तलवार लगती है। इस तलवार से वैराग्य प्राप्त होकर मोह,

ममता,काम,क्रोध,लोभ,मत्सर,अहंकार इनका नाश होता है। शत्रु पक्ष की तलवारे झेलने के लिए युक्ति से ढाल बांधनी पडती है और वह ढाल तलवारो के वार झेलने लिए युक्ति से उपयोग में लानी पडती है ऐसे ही काल शत्रु के क्रोध,सरीखी तलवारे झेलने के लिए जरणा याने सहनशिलता की ढाल युक्ति से उपयोग में लानी पडती है। इस तरह काल से लढने के लिए शील,विश्वास,लिव,जरणा ये सावधानियाँ रखनी पडती है।।१।।

नेम कटारो कस कर बांधो ।। बिरहे तोफ कूं छोडो रे ।।
चड बेराग तुरंग के उपर ।। काळ फोज कूं मोडो रे लो ।।२।।

शुरवीर शत्रु को मारने के लिए पेट को कटारा बहुत मजबुती से बांधकर रखते है और शत्रु को मारने का मौका हाथ में आते ही पेट का कटारा मारके उसे खतम कर देते। ऐसे ही संत ने साधू लक्षण के ६४ के ६४ नियम मजबुती से पालने चाहिए। लढाई में शत्रुओं को मारने के लिए तोफे चलानी पडती ऐसे ही काल के दुत काम,मोह,ममता को मारने के लिए रामजी की विरह की तोफ चलानी पडती है। लढाई में स्वार होने के लिए घोडा चाहिए ऐसे ही मोह,ममता,काम पर स्वार होने के लिए ज्ञान वैराग्य यह घोडा चाहिए इसप्रकार के इन सभी अस्त्रों का उपयोग कर काल फौज को पलटाना चाहिए। ।।२।।

सिंवरण सेल भजन कर भाला ।। मत की गहो कबाणी रे ।।
सुरत निरत को बाण करीजे ।। कोट किल्ला कर बाणी रे लो ।।३।।

लढाई में जैसा बडा भाला चाहिए ऐसे काल को मारने के लिए रामनाम भजन सुमिरन का बडा भाला चाहिए। शत्रु पक्ष को मारने के लिए कबाण चाहिए ऐसे ने:अंछर के मत की कबाण चाहिए। इस कबाण से काल के मुख में डालनेवाली माया मारते आती। कबाण से शत्रु को मारने के लिए तीर चाहिए ऐसेही सूरत और निरत ये तीर शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन काल कर्म करनेवाले विकारो को मारने के लिए चाहिए। जैसे किल्ले की शरण लेनेवाले को किल्ले के बाहर के शत्रु की गोली,बाण या तलवार नहीं लगती वैसे ही सतगुरु की बाणी के आश्रय मे रहनेवाले को सतगुरु के बाणी में बताए गए ज्ञान के अनुसार चलने पर काल का वार नहीं लगता ऐसा यह सतगुरुके बाणी का किल्ला और कोट है इस किल्ले में रहनेवाले को काल का भय नहीं होता। ।।३।।

चित्त की छुरीयाँ बाण कर मन का ।। सास सोकरडां किजे रे ।।
अगज ज्ञान त्याग कर तोफाँ ।। भ्रम ढाय सब दिजे रे लो ।।४।।

जैसे रण में शत्रु को फेक के मारने के लिए छुरियाँ और बाण रहते ऐसे काम,क्रोध,लोभ, मोह,मत्सर,अहंकार,शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन विकारोंको मारने के लिए ज्ञान वैरागी चित्त और ज्ञान वैरागी मन का उपयोग ले। शत्रु के समुह पर वार करने के लिए शत्रुके समुह पर दौड जाना पडता है वैसे ही काल कर्मो पर रामनाम की साँस उसाँस की दौड लगानी पडती। लढाई में तोफ के काम मे लानेवाले एक तरह के गोले को गजफा कहते।

यह गजफा तोफ में रखकर शत्रु के उपर शत्रु का नाश करने के लिए फेकते है ऐसे ही गुरु के ज्ञान के गजफे को त्रिगुणी माया के सुखों को त्याग की तोफ में रखकर माया ने बनाए हुए भ्रमरुपी किल्ले ढहकर गिराना चाहिए । ।।४।।

सस्तर सबे बांध यूं लीजे ।। राड़ निसो दिन किजे रे लो ।।
के सुखराम जीत गढ चडीया ।। बोहोर न जलम धरी जे रे ।।५।।

इस प्रकार सभी शस्त्र साथ लेकर जम से रात-दिन लढाई कर। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ऐसे शस्त्रों का उपयोग करके यम से लढ और यम से जितकर ब्रम्हंड गड पर चढ जा। गड पर चढ जाने के पश्चात होनकाल में कभी जन्म नहीं होगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।५।।

१६५

।। पदराग हिन्डोल ।।

जनसा सूर न कोई हो
जनसा सूर न कोई हो ।।
तीन लोक फिर जोई साधो ।। जनसा सूर न कोई हो ।। टेर ।।

मैंने तीनो लोग घुमके देखे लेकिन संत जन जैसा,शूरवीर कही भी,कोई भी नहीं दिखा। ।।टेर।।

राजा राव घडी पल जूंझे ।। पीछे जुग सा होई हो ।। १ ।।

यहाँ राजा और रंक घंटा भर या पलभर झुंज के,पिछे से जैसे के वैसे,जगत के मनुष्य के सरीखे हो जाते है लेकिन यह संत जन तो सतस्वरुप की भक्ती करने में,जनम भर माया और काल से झुंजते परंतु उनका भक्ती करनेका शूरवीरपणा कभी भी नहीं उतरता ।।१।।

बामण भाट करे सो तागा ।। च्यार दिनाँ दु:ख होई हो ।। २ ।।

ब्राम्हण और भाट यह त्रागा करते उनका उन्हें चार दिन तक दु:ख होता। फिर घाव भरकर दुरूस्त हो जाते परंतु संत जन का घाव जनम भर मिटता नहीं और संत जन फिरसे,जगत के लोगो जैसे होते नहीं। ।।२।।

आठ पोहोर बिन खांडे जूंझे ।। निमकन भूले सोई हो ।। ३ ।।

यह संत जन रात-दिन,अष्टोप्रहर तलवार के सिवाय माया/काल के साथ झुँजते रहते फिर भी भक्ती करना एक निमिष मात्र भी नहीं भुलते। इस तरह से संत जन शुरवीर होते है। ।३।

ओर सूर सब काया मारे ।। आतम जन छिन खोई हो ।। ४ ।।

दूसरे शूरवीर तो सब,अपनी शरीर को मारते परंतु संत जन अपनी आत्मा को क्षीण करके गवाँ देते है। ।।४।।

के सुखराम सुरां नर माँही ।। या सम सूर न होई हो ।। ५ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,की मनुष्यो में संत जनो जैसा शुरवीर कोई

भी मनुष्य नहीं हो सकता। ।।५।।

१८७

।। पदराग बिलावल ।।

जुग सोभा चाहुँ नहि

जुग सोभा चाँहु नहि ।। सुख संपत कोई ।।

करामात करतूत की ।। ईछ्या नाँ माई ।।टेर।।

मेरी संसार में शोभा होनी चाहिए ऐसी मेरी इच्छा नहीं इसलिए जिससे मेरी जगत में शोभा होगी ऐसी मुझे धनसंपदा,सुख सम्पदा मिलनी चाहिए एवम् मुझे जगत मानेगा ऐसे पर्चे चमत्कार करते आना चाहिए यह इच्छा नहीं। मुझे सतगुरु सत मिलना चाहिए यही इच्छा है। ।टेर।

हे कोई अेसा सूरवाँ ।। मन कूं समझावे ।।

हद बेहद कुं छाड़ के ।। मोरी दिस आवे ।।१।।

ऐसा कोई शूरवीर जगत में है क्या?जो मेरे मन को सतगुरु सत की चाहना है वह पूरी करेंगा तथा मुझे हद बेहद छोड्के सतगुरु के दिशा में ले जाएगा ।।१।।

जंतर मंतर टोटका ।। ओर कळा सारी ।।

हमा नगर के मांय ।। इछ्या माने नहीं मारी ।।२।।

जंतर,मंतर,टोटका और अन्य सारी कला में तथा हमानगर के अंदर याने होनकाळ नगर में रहने की मेरी इच्छा नहीं ।।२।।

देव कळा दाणो कळा ।। भगवत कळ सारी ।।

दुरबळ कूं माने नहीं ।। अेसी कुदरत न्यारी ।।३।।

मुझे देवताओंके पर्चे चमत्कार,राक्षसोंके पर्चे चमत्कार,भगवत याने होनकाळ पारब्रम्ह की कला कुदरत में पहुँचाने के लिए दुर्बल दिखती इसलिए इन कलाओंको मानता नहीं आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह कुद्रत कला इन सभी कलाओंसे न्यारी है। ।।३।।

हे कोई अेसो सूरवो ।। मन कूं समझावे ।।

---------।।---------।।४।।

ऐसा जगत में कोई सतगुरु सत पाया हुआ शुरवीर है क्या?जो मेरे मन को कुदरत समझा सकेगा। ।४।

मात पिता दोनु तजे ।। गुरू की मा मुंडे ।।

धिन हंसा सुखराम के ।। सतगुरू मत ढूंडे ।।५।।

जिसने माता याने त्रिगुणी माया और पिता याने पारब्रम्ह होनकाल को त्यागा है और काल के मुख में ढकेलनेवाले सभी गुरुओ से मुख मोडा है और जो सतगुरु के सत को खोजता है वह हंस धन्य है। ।।५।।

२५६

|| पदराग हिन्डोल ||

ओर सकळ बिध सेली

ओर सकळ बिध सेली || भगती का काम करारा हो ||टेर||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,और भी दुसरी विधि तो सभी करना सहज है परंतु भक्ति करने का काम बहुत कठिन है। भक्ति करने के आडे आनेवाले मेरे मदोन्मत मन को रोकने का काम मेरे लिए बहुत कठिन है इसलिए मेरे लिए भक्ति करने का काम करारा है। ||टेर||

जे सुण साहिब बाँय संभावे || तो कोइ उतरे पारा हो ||१||

मुझे मेरे बल पर भवसागर से पार होना बहुत कठिन है। यदि मालिक मेरी पुकार सुनकर बाँह पकडेंगे तोही मैं पार उतर पाऊँगा नहीं तो मैं भवसागर कभी पार उतर नहीं पाऊँगा। ||१||

धण देणा वे तो सुण सेली || सेली जुग को बुहारा हो ||२||

यदि लोहार के पास,घण चलाने का काम करना है,तो भी वह मेरे लिए आसान है एवम सभी धन दे देना,खाने-पिने पुरता भी धन नहीं रखना यह भी मेरे लिए आसान है और संसार के दूसरे कठिन से कठिन व्यवहार सभी आसान है परन्तु भक्ति करने का काम बहुत ही कठिन है। ||२||

मर मिटणो व्हे तो सुण सेली || सेली चोरी धाड़ा हो ||३||

झगडे मे मर मिट जाना,चोरियाँ करके,डकैतियाँ करके राज के दंड भोगना,जेल भोगना यह सभी मेरे लिए आसान है परंतु भक्ति करना कठिन है। ||३||

घर छिटकाय चले सो सेली || सेली मूंड मुंडारा हो ||४||

घर,पत्नि,पुत्र,पुत्री,राज,धनसंपदा के सुख नहीं लेना त्याग देना और अपना सर मुंडाकर बैरागी होना यह सभी विधियाँ मेरे लिए आसान है परंतु भक्ति करना कठिन है। ||४||

इमरत छाडज देणो सेली || सेली बिष बिकारा हो ||५||

मेरे लिए अमृतसरीखी सुख देनेवाली वस्तु त्यागना यह भी आसान है। विषय रसो को त्यागना यह भी आसान है परंतु भवसागर पार करा देनेवाली भक्ति करना कठिन है। ।५।

जप तप तीरथ संजम सेली || सेली साँग शिर धारा हो ||६||

बावन अक्षरो के जप करना,पाँचो इंद्रियों को तपाना,अड्सठ तिरथ कर कर शरीर को गलाना,संयम पालना याने ब्रम्हचर्य से रहना मेरे लिए आसान है परंतु भक्ति करना मेरे लिए कठिन है और शरीर के उपर सोंग(भेष)धारण कर लेना,(कान फाड्कर मुद्रा डालना और गले में लिंग बांधकर रखना,शरीर के उपर भस्म लगाना,रुद्राक्ष की माला पहनना,बाल उखाड्ना,मुँहपर पट्टी बांधना,शिखा निकालकर,जानवरो का हवन करके भगवे वस्त्र पहनना,सुन्ता करना,हरे वस्त्र पहनना,जटा बढाना,जनेऊ पहनना आदि सभी सोंग

(भेष)धारण करना) ये सभी आसान है परंतु भक्ति करना मेरे लिए कठिन है। ।।६।।

सेली डाक अगन में पडणो ।। सेली डंड शिर भारा हो ।।७।।

जोहर सरीखा छ्लाँग लगाकर आग में पड्कर शरीर को राख कर देना तथा राज का भारी से भारी दंड सिर पर लेना और वह भोगना और सिरपर चप्पल,जुते रखकर बेइज्जती करवाना यह सभी मेरे लिए आसान है परंतु भक्ति करना कठिन है। इन सभी विधियों में मन का कितना भी विरोध रहा तो भी वह विरोध झेलना मुझे आसान है परंतु भक्ति करना मेरे लिए बहुत कठिन है। ।।७।।

के सुखराम आ भगत दोहोली ।। दोरो मन मतवारा हो ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मुझे भक्ति के आडे आनेवाले मदोन्मत्त हाथी के समान अलमस्त हुए मन को रोकना बहुत कठिन है इसलिए मुझे भक्ति करना बहुत दोरी याने कठिन है दिखती है। ।।८।।

२२२

।। पदराग सोरठ ।।

मन रे करडी बिना सब काची ।।

ललफल माँहे नहीं फळ दायक ।। क्हां बूरी क्हां आछी ।।टेर।।

अरे मन,अरे जीव,अमरलोक जाने के लिए सतगुरु जैसे बताते वैसे कड्क रहकर भक्ति कर। सतगुरु बताते वैसे कड्क रहकर भक्ति न करते कच्चेपन में याने ललफल में याने सतगुरु के भक्ति के साथ माया की करणियाँ साधी तो अमरलोक फलदायक नहीं होंगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ललफल में काल के मुख में रखनेवाली माया की छोटी बडी भक्ति भी हासील नहीं हो सकती तो काल के मुख से निकालनेवाली सतस्वरुप की भक्ति कैसे हासील होंगी?।।टेर।।

भजन करे तो करे करारो ।। दास भाव सुध होई ।।

ज्ञान गहे तो फटक पिछाँटी ।। निर्भे मत ले जोई ।।१।।

अमरलोक पाने के लिए अगर तू सतस्वरुप का भजन करता है तो अन्य देवता का कोई भजन मत कर और सतस्वरुप का करारा याने जोर लगाके भजन कर। सतस्वरुप का दास भाव रखना है तो शुध्द कोरा सतस्वरुपी भाव रख। सतस्वरुप के दास भाव के साथ अन्य देवताओंका भाव मत रख। सतस्वरुप का ज्ञान धारण करना है तो सतस्वरुप ज्ञान मे माया के करणियोंके सुखों के विचार मत आने दे। उस मत को झाड फटक कर निकाल दे और सतस्वरुप के महासुखों के मत निर्भयता से धारण कर। ।।१।।

त्याग करे तो तज घर आदु ।। ज्यां सूं हँसो आयो ।।

पाँचूं भूत तीन गुण माया ।। महात्तत जिकण बणांयो ।।२।।

त्यागना है तो जगत के जोगी जैसे घर त्यागते वैसे घर न त्यागते जहाँ से हंस आदि में माया में आया उस विषय विकारोंका आद घर त्याग। जिसने महतत्त और पाँच भूत

आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी बनाए और रजोगुण ब्रम्हा,सतोगुण विष्णु और तमोगुण शंकर यह माया बनाई उस पारब्रम्ह रुपी पिता और इच्छारुपी माता त्याग। ।।२।।

तपस्या करे तो ताव ओ देणो ।। मन को कयो न कीजे ।।
सतगुरू ज्ञान कहे ज्यूं करणो ।। पराभक्त चित दीजे ।।३।।

तपस्या करना है तो जैसे जगत के तपस्वी शरीर को तपाते वैसे न तपाते मन को तपाओ मन जो वेद,शास्त्र,पुराण,कुराण की करणियाँ करने को कहता वह मत कर और सतगुरु जो पराभक्ति का ज्ञान कहते वह कर और त्रिगुणी माया से चित्त निकालकर पराभक्ति में चित्त दे। ।।३।।

तीरथ करे तो कर अड़सट रे ।। अेको भूल न जाये ।।
तन मन खोज उलट गढ चडणा ।। ब्रम्ह अगम में न्हाये ।।४।।

जगत के लोग धरती पर के अड़सठ तिर्थ करते वे नहीं कर। तन,मन को खोजकर बंकनाल से उलटकर गढ पर चढो और पिंड को खंड ब्रम्हंड बनाकर पिंड में ही एक भी तिर्थ न छोड़ते सभी अड़सठ तिर्थ कर। जैसे जगत में नर-नारी नदियों के जल में न्हाते वैसे न न्हाते ब्रम्ह अग्नि याने दसवेद्वार सतस्वरुप अग्नि में न्हा। नदियों में न्हाने से क्रियेमान के कुछ पाप धोये जाते परंतु ब्रम्ह अग्नि में न्हाने से अनंत जुण से आए हुए संचित कर्म याने संचित पाप धोये जाते। ।।४।।

सेवा करे तो कर नर अेसी ।। उलट तोय समावे ।।
दसवे द्वार बिराजे साहिब ।। रूम रूम जस गावे ।। ५ ।।

सेवा करनी है तो जैसे जगत मंदिर में माया के देवता से तन, मन से एक हो जाते वैसे न करते पिंड में उलटकर दसवेद्वार में साहेब प्रगट कर साहेब का मंदिर बना। यह साहेब दसवेद्वार में बिराजता उसमे हंस के देह से सदा के लिए समा जा। जैसे जगत में मुख से मायावी देवता के नाम गाते वैसे देह के रोम रोम से साहेब का ररंकार यह आधा नाम अखंडीत गा। ।।५।।

ममता मार जिकण अे जाया ।। सुभ असुभ न दोई ।।
धीया प्रण मांड घर अेसो ।। अमर पूत ज्यां होई ।। ६ ।।

हे आत्मकन्या,तु त्रिगुणी माया के ममता को मार और सतस्वरुप ज्ञान प्रगट कर और शुभ याने त्रिगुणी माया से मिलनेवाले सुख और अशुभ याने काल के दु:ख का कोई बिचार मत कर इसप्रकार तु सतस्वरुप ब्रम्ह के साथ लग्न कर और दसवेद्वार में घर बसा इससे तुझे अमरपद यह पुत्र प्राप्त होगा। ।।६।।

सुरे सपूंछी जिण घर बांधो ।। अमर लोक में दूझे ।।
तीन लोक में फिरे भटकती ।। ज्यां ने मूरख बूझे ।। ७ ।।

अमर लोक में दुध देएगी याने सुख देएगी ऐसे सुरे सुपुंछी याने अमर देवगाय याने विज्ञान

भक्ति को अमरलोक में बांध। तीन लोक में माया के सुख देती परंतु काल का दु:ख जरासा भी हलका नहीं करती ऐसे सुरे सुपुंछी याने देवगाय याने माया की भक्ति को मत धार। यह देवगाय खुद काल के मुख में तीन लोक में भटकती फिरती और भक्त को भी फिराती ऐसे देवगाय को याने माया के भक्ति को मुरख पुछ्ता।।७।।

मन कुं थोभ निजमन करणा ।। रस बिज्ञान पिळावे ।।
के सुखराम धार सिर सतगुरू ।। अमर लोक यूं जावो ।। ८ ।।

यह विकारी मन ३ लोक १४ भवन में विषय विकारों में फिरता उसे रोक और इस मन को आनंद रस विज्ञान पिला पिलाकर साहेब के चौथे लोक पानेवाला निजमन कर। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयों से कहते है की,इसप्रकार सभी विज्ञानी विधियाँ करा देनेवाले सतगुरु को सिरपर धारण करो और अमर लोक जाओ। ।।८।।

२५५

।। पदराग बिलावल ।।

ओ तेरे क्या न्यांव है
ओ तेरे क्या न्यांव हे ।। सुण लीज्यो सांई ।।
नुगरा नर राज स करे ।। जन भिखण जाई ।।टेर।।

हे साई सुनो,आप सभी सृष्टी के मालिक हो और आप सभी जीवों के उत्पत्तीकर्ता है तथा सभी का आपही पेट भरते फिर आपका ऐसा कैसा न्याय है?नुगरा याने जिसे आपने उत्पन्न किया,गर्भ में उसका रक्षण किया और वह आपकी भक्ति करता नहीं और जो आपको पसंद नहीं ऐसे सभी खोज खोज के नीच से नीच कर्म करता वह जीव राजा महाराजा समान सभी सुख भोगता और जो सुगरा है याने आपकी भक्ति निजमन से करता वह हलके से हलके सभी दु:ख भोगता। उसे पेट भरने पुरता भी खाने को मिलता नहीं। उसे पेट भरने के लिए भीख माँगनी पडती। अरे साँई,ऐसा कैसा आपका न्याय है?।।टेर।।

जन दुखियाँ तो हि भला ।। मेरी भगत कमावे ।।
अमरा पुर ले जाव सूं ।। जुग जुग सुख पावे ।।१।।

साँई ने कहा,मेरा यह संत दुखी है,कष्ट में है तो भी अच्छा है वह महासुख के देश को जाने की भक्ति कमा रहा है। उसे मैं अमरापुर ले जाऊँगा फिर वह वहाँ युगानयुग अनंत महासुख भोगेगा। ।।१।।

जन कूं माया राज द्युं ।। तो सबही मुज माने ।।
नरक कुंड खाली रहे ।। जुगमें कुण जामे ।।२।।

अगर मैंने मेरे संत को माया दी तो ये कुकर्मी,निचकर्मी,विषय विकारी जीव भी धनमाल माया के लिए मेरी भक्ति करेंगे परंतु मैंने सतन्याय से बिचार करके आदि से संतों के लिए अमरलोक और इन कुकर्मी,निचकर्मी,विषय विकारी जीवों के लिए नरककुंड और

चौरासी लाख योनि के महादु:ख बनाए है। निचकर्मी जीवों को भी अमरलोक में ले गया तो फिर मैंने जगत में सतन्याय से बनाए हुए नरककुंड में और चौरासी लाख योनि में किसको डालू?इस कारण यह मैंने बनाया हुआ नरककुंड खाली रहेगा। उसीतरह चौरासी लाख योनि में कौन जन्मेगा?इसतरह से स्वामी ने प्रश्नकर्ते संत को जवाब दिया। यह जवाब उस प्रश्नकर्ते के समाधान पूर्ता दिया है। यह जवाब सभी जीवों के लिए दिया नहीं क्योंकि ,स्वामी को सभी जीव परमपद को ले जाना है। यह प्रश्नकर्ता के प्रसंग के अनुसार प्रश्नकर्ता का समाधान होना चाहिए और भक्ति के बारे में शंका खडी नहीं होनी चाहिए इसलिए जवाब दिया है। ।।२।।

देऊं तोई लेवे नहीं ।। मेरा जन माया ।।
जा सुख जाण्या पीव का ।। जा ने ओर न भाया ।।३।।

मै मेरे संतो को धनमाल देना चाहता तो भी मेरे संत वह धनमाल लेना चाहते नहीं। वह भुखे रहना पसंद करते परंतु जिस धनमाल से भक्ति में अतंर पडता,बाधा उत्पन्न होती, भक्ति करने का स्वभाव नष्ट होता ऐसी कोई भी सुख की वस्तु लेना चाहता नहीं,लेता नहीं। जैसे–स्त्री ने पती का सच्चा सुख जाना है उसे अन्य स्त्रियों समान गहने, कपडे, बाहर घूमना आदि रुची रहती नहीं और उसमे आनंद आता नहीं ऐसी पत्नि के लिए पति ने गहने,कपडे, बाहर घूमना आदि में पत्नि में रुची लाने की कोशिश भी की तो भी उसमें रुची आती नहीं। ऐसे मेरे भक्तों को मैंने माया के सुख कितने भी दिए तो भी माया के विषय विकारो के सुखों में प्रीति आती नहीं। ।।३।।

माया भगती अेकटी ।। भेळी नहि रे हे ।।
इण कारण सुखराम के ।। जन कूं दुख देहे ।।४।।

भक्त को पति परमात्मा के सुखों के आनंद के आगे माया के धनमाल के सुख जरासे भी भाते नहीं उलटा माया के धनमाल के सुख हीन लगते,तुच्छ लगते और ये सुख लेने में ग्लानी आती। इस भक्त को साहेब जैसा रखता याने माया में सुख में रखे या दु:ख में रखे उसे साहेब के रखने में संतोष रहता,आनंद उत्पन्न होते रहता इसलिए ये भक्त माया प्राप्ती के लिए जरासे भी उपाय करता नहीं परंतु भक्ति के लिए बडे से बडे कोई भी उपाय करना छोडता नहीं। इस संत के स्वभाव से भक्ति और धनमाल दोनो विपरीत वस्तु संतों के घर में एक जगह मिलके वास करती नहीं। संतों को भक्ति के सुख मिलते रहते और माया के दु:ख पडते रहते और ये दु:ख जगत को महसूस होते परंतु यही दु:ख संत को जरासे भी महसुस होते नहीं उलटा संत को मैं बहुत सुखी हूँ ऐसा महसूस होते रहता आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हैं। ।।४।।

२९७

।। पदराग बिहगडो ।।

राम तेरी दाय पड़े जुं किजे

राम तेरी दाय पडे जुं कीजे ।। भावे मोख मुगत हर मेलो ।।
भावे दोजख दीजे ।। राम तेरी दाय पडे जुं कीजे ।।टेर।।

रामजी आपको मुझे मोक्ष मुक्ति में भेजना अच्छा लगता है तो मोक्ष मुक्ति में भेजो या आपको नरक में भेजना अच्छा लगता है तो नरक में भेजो। मैं तो आपकी ही भक्ति करुँगा,आपकी भक्ति कभी नहीं छोडूँगा । ।।टेर।।

मो कूं तो हरि भगत ज करणी ।। भजन अखंडत तेरो ।।
मो खुसियाँ सुं बिड़द बदे तो ।। कांई बिगड सी मेरो ।।१।।

मुझे तो रामजी आपकी भजन भक्ति अखंडीत करनी है। मेरे लुटे जाने से आपका ब्रिद बढता है याने शोभा बढती है तो मेरे लुटे जाने से मेरा कुछ नहीं बिगडता। जिससे आपकी ब्रिद बढती है वह आप करो ।।१।।

जब लगं मुख में जिभ्या चाले ।। तब लग हर हर के सूं ।।
भावे तार मार भावें खीजो ।। सरण आप की रह सूं ।।२।।

मैं मेरे मुँह में जब तक जीभ चलेगी तब तक मैं मुख से रामराम उच्चारण करुँगा। आप मुझे तारो,क्रोध करो या मारो जो आपको चाहिए वह करो,मैं तो आपके शरण में ही रहूँगा। आपने कुछ भी किया तो भी मैं आपका शरणा नहीं छोडूँगा। ।।२।।

भावे आप ओदसा भेजो ।। भांवे मुज बिट मावो ।।
सतगुरू सरण नांव नहि छाडू ।। ऊथल पुथल होय जावो ।।३।।

आपको मेरी बुरी दशा देखने में अच्छा लगता है तो मुझे बुरी दशा में रखो। आपको मेरी हँसी होते देखने में याने विडंबना होते देखने में अच्छा लगता है तो मेरी घर समाज में हँसी याने विडंबना होने दो। मैं तो सतगुरुजी तीनो लोक भी मेरे से उलट पलट गए तो भी आपका शरणा और आपने बताया हुआ रामनाम नहीं छोडूँगा ।।३।।

सुख दुख ताव बोहोत दो साई ।। भावे देहे धर कूटो ।।
केहे सुखराम भगत नहि छाडूं ।। जे तीन लोक रहे रूठो ।।४।।

आप रामजी मुझे सुख दु:ख जितना देना है उतना दो। लगे तो देह धारण करके मुझे कुटो। आपको मुझे जो तकलिफ देना है वह तकलिफ दो परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि हे रामजी,मैं आपकी भक्ति नहीं छोडूँगा। आपकी भक्ति करने से स्वर्ग के सभी देव,पाताल के सभी नाग और मृत्युलोक के सभी नर–नारी मेरे उपर नाराज हो जाते है,रुठ जाते है तो नाराज होने दूँगा रुठने दूँगा परंतु मैं आपका शरणा और भक्ति नहीं छोडुँगा। ।।४।।

३१६

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई समझ सोच रहो गाढा
भेदी बीना बात मती मानो ।। सब ही फिरत हे आड़ा ।।टेर।।

अरे साधु भाई,अमरलोक में पहुँचानेवाले भेदी याने जानकार संत के सिवा अन्य ब्रम्हा,

विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार,ओअम,सोहम के पहुँचवाल सभी ज्ञानी,ध्यानी,सभी सिध्दों की बात मत मान। ये सभी परममोक्ष पाने के लिए आडे फिरते है याने जीव को परममोक्ष पाने से दुर रखते है। इसलिए साधो भाई,इस बात को समझो और समझकर विचार करो और फिर पक्का मजबूत होकर रहो। जिसको भेद मालूम हो,उसकी बात मानो। ।।टेर।।

आपो खोज आप नहीं चीन्या ।। तब लग माया पूजे ।।
बंक नाळ होय उलट न चडीया ।। जब लग नाव न सूजे ।।१।।

जब तक तु स्वयंम का ब्रम्ह खोजता नहीं याने अपने ब्रम्ह में परब्रम्ह है याने मेरे आत्मा में परमात्मा है यह पहचानता नहीं है तब तक तु जगत के सभी जीव जैसे परममोक्ष न मिलनेवाली माया की भक्ति करते है वैसे ही तु भी भक्ति कर रहा है यह समझ। तु अपने तन में ही बंकनाल से होकर उलटकर दसवेद्वार चढता नहीं तब तक स्वयंम के ब्रम्ह में सत परमात्मा है यह सुझता नहीं याने विश्वास आता नहीं। ।।१।।

भ्रमावण कूं से कुळ जग हे ।। स्मझावे जन बिर्ळा ।।
छुछम बेद के भेद बिना रे ।। सब माया का किरळा ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,कुल के सभी लोग जगत के नर–नारी और ज्ञानी,ध्यानी,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि माया के भक्तियोंमें जरासा भी काल का दु:ख नहीं है उलटा काल का दु:ख निवारण कर सदा सुख देने की रीत है ऐसा समझते और इन माया के भक्ति के सिवा दुजी कोई भक्ति सदा दु:ख निवारण कर सुख देनेवाली है ही नहीं ऐसा जगत में भ्रम उपजाते। ये महासुख के सतस्वरुप के सुक्ष्मवेद का भेद जरासाभी नहीं जानते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जीव को भ्रमाने के लिए सारा कुल जगत है परंतु समझानेवाले संत बिरले ही है। इसलिए इन सभी का ज्ञान काल के मुख से निकालनेवाली बिना काम की झूठी चिल्लाचोट है। यह काल से निकालनेवाला परममोक्ष का असली ज्ञान नहीं है । ।।२।।

बावन हरफ बेद का कहीये ।। ओऊँ अजपो ऊला ।।
अबगत अलख निरंजण गावे ।। भेद बिना सब भूला ।।३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,वेद में बताई हुई ५२ अक्षरो से बनी हुई सभी करणियाँ ये माया है तथा ओअम यह माया है और जिसे जपा नहीं जाता ऐसे अजप्पा स्वयम् कालस्वरुप पारब्रम्ह है। यह कालस्वरुप पारब्रम्ह माया के साथ भोगकर सृष्टी की रचना करता और समयानुसार काल बनकर सृष्टी को खाता ऐसा यह अस्सल माया है। ऐसे पारब्रम्ह होनकाल ईश्वर को कोई ज्ञानी,ध्यानी,अविगत कहते तो कोई ज्ञानी,ध्यानी अलख कहते,तो कोई ज्ञानी,ध्यानी निरंजन कहते और माया के परे वैरागी है ऐसा समझते परंतु ये ज्ञानी,ध्यानी ये होनकाल पारब्रम्ह ईश्वर सृष्टी उत्पन्न करनेवाला असली माया है यह नहीं समझते। ये ज्ञानी,ध्यानी सतनाम का भेद न पाने के कारण

वेद,शास्त्र,पुराण,ओअम,सोहम,अजप्पा,पारब्रम्ह होनकाल मे भुल गए है। ।।३।।

ब्रम्हा बिस्न महेसर सक्ती ।। येहे च्यारूं ने धारा ।।
अड्वां फाड़ निसरे बारे ।। सो जन उतरे हे पारा ।।४।।

इस प्रकार सतनाम भुल जाने के कारण सभी जगत के नर–नारी ज्ञानी,ध्यानियों ने ब्रम्हा, विष्णु,महादेव,शक्ति इन चारो को धारण कर लिया है परंतु ये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति ही जीव को परममोक्ष पाने के लिए अड्वे है यह जीव नहीं समझपाते। जैसे खेत में उगा हुआ अनाज पंछी खावे नहीं इसलिए अड्वे रहते इन अड्वो को मनुष्य समझके कुछ पंछी भुख लगने पर भी अनाज नहीं खाते और वे खेत से उड्के भाग जाते। जो पंछी यह समझजाते की,ये पुतले असली मनुष्य नहीं है नकली बास के पुतले है वे उस खेत में रमते और पेटभर अनाज खाते। इसीप्रकार ८४ लाख योनि भोग के मनुष्य देह में आने पर जिसे परममोक्ष फल की भुख लगी थी वह फल खा सकते है परंतु ये ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति अड्वे बनते जैसे फसल में अड्वे रहते और वे फसल खाने नहीं देते ऐसे सतस्वरुप का फल ये ब्रम्हा,विष्णु, महादेव अड्वे बनके खाने नहीं देते है जैसे जो पंछी इन पुतलो को मनुष्य के झुठे पुतले समझकर इन पुतलो का डर नहीं रखते वे सभी पंछी अनाज को खाकर तृप्त हो जाते ऐसे ही जो जीव इन ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति ये दु:ख देंगे,कोपेंगे और तकलिफ देंगे ऐसा जिन्हें डर नहीं लगता वे ही संत इन सबके सतस्वरुप की भक्ति करेंगे और वे संत भवसागर से पार उतर जाएँगे। ।।४।।

भणिया खरा गुण्या नहीं कोई ।। जब लग काम न आवे ।।
के सुखराम भेद बिन भजीयाँ ।। प्रममोख नहीं पावे ।।५।।

ब्रम्हा के वेद,शंकर के शास्त्र और हट्योग,विष्णु की नवविद्या भक्ति,शक्ति का लबेद,वेद व्यास के पुराण आदि बहुत बार पढ लिए और पढ के समझ लिए कि इन ५२ अक्षरो के ज्ञान,ओअम,सोहम,अजप्पा में परममोक्ष नहीं है यह जब तक गुणते नहीं याने भेद से पकड्ते नहीं तब तक ये सभी पढना,समझना मोक्ष पाने के कोई काम का नहीं है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतनाम के भेद सिवा ५२अक्षरोंकी करणियाँ, ओअम,सोहम,अजप्पा,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतारोंके ज्ञान जिसमें परममोक्ष का भेद नहीं है ऐसे ज्ञान को भजने से परममोक्ष नहीं पाओंगे। परममोक्ष सतनाम को भजने से ही पाओगे इसलिए परममोक्ष चाहणेवाले सभी साधो भाई,५२अक्षरो की करणीयाँ,ओअम, सोहम,अजप्पा ये माया है इसमे परममोक्ष पाने की विधी नहीं है यह समझो और समझकर विचार करो और पक्का रहकर परममोक्ष के भेदी सिवा किसी भी माया तथा ब्रम्ह के ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी की बात मत मानो। ।।५।।